# AGRADIANCE

"To Bring Together People of God"

For Private Circulation Only

AGRA ARCHDIOCESAN NEWS LETTER

JUNE-JULY 2022

St. John the Baptist : 24 June

St. Deyasahayam : 14 Jan

Newly Ordained Fr. Asime Beck with
the Abp. Dr. Raphy Manjaly
May 15, 2022, Katkahi, Gumla

# Archdiocese at a Glance

Abp. Raphy presenting inlay of Taj to the Holy Father

Jim blessed in Abp. House to keep the Fathers busy

Dn. Asime Beck is ordained a priest at his native parish

Jashn-e- Ruh-e- Pak!

Odissa C.M. Sri. Biju Patanaik – audience with Holy Father

Lend me your ears! Abp. to Seminarians

May Devotion-Rosary Month concluded, Night Vigil at Lower & Upper Padri Tola and Kutlupur (Agra) – All Laity initiative!

# Editorial

प्रिय मित्रों, अग्रेडियन्स का जून-जुलाई का अंक आपके हाथों में है। भीषण गर्मी के कारण जून-जुलाई में हम संयुक्तांक ही प्रकाशित करते हैं, कारण- एक तो महाधर्मप्रांत में कोई विशेष कार्यक्रम नहीं होता दूसरा अधिकांश जिम्मेदार लोग ग्रीष्मावकाश में होते हैं। इस कारण लेखों व समाचारों का अभाव रहता है। जैसे-जैसे करके पत्रिका छाप भी देते हैं तो कुछ लोग पत्रिका ले-जाने, बांटने की ज़हमत नहीं करते। आशा है कि प्रस्तुत अंक आपको पसन्द आयेगा। आप अपने विचार, आलोचनाएं आदि बेबाक होकर लिख सकते हैं।

गत माह संत पिता फ्रांसिस ने कईं संतों की घोषण की। उन्होंने भारतमाता के पुत्र देवासहायम पिल्लई को भी संत का पवित्र दर्जा प्रदान किया। कुछ दूषित मानसिकता वालों की जाति प्रथा की विकृत संस्कृति के चलते **'पिल्लई'** शब्द को वाटिकन को आखिरकार उनके नाम से हटाना ही पड़ा, क्योंकि 'पिल्लई' शब्द एक उच्चजाति का सूचक शब्द है। अब हम उन्हें संत देवासहायम के नाम से जानेंगे। संत देवासहायम नये-नये संत घोषित हुए हैं, उनके पास ज्यादा अर्ज़ियाँ नहीं पहुँची होंगी, इसलिए हम पूरे तन-मन से उनकी गुहार लगायें। कु. जिबी लुकोस उनके जीवन पर प्रकाश डाल रही हैं।

इसी कड़ी में संत पिता फ्रांसिस ने विगत माह 21 नये कार्डीनल नियुक्त किये हैं। कार्डीनल समाज से ही नया संत पिता चुना जाता है। इन नये कार्डीनलों में दो धरती पुत्र - अपनी भारतमाता के लाल भी हैं- गोवा-दमन और हैदराबाद के महाधर्माध्यक्षद्वय। कुछ भारतीय इस बात पर भी हर्ष मना रहे हैं कि हैदराबाद के महाधर्माध्यक्ष एन्थोनी पूला पहले दलित कार्डीनल हैं। वैसे मसीह में सब एक हैं- न कोई यहूदी है न कोई यूनानी, न कोई नया है और न कोई पुराना।

जून-जुलाई हमारे सर्किल में ट्रांसफर का समय होता है। प्रभु भी स्थानानंरित होकर अपने स्वर्गीय पिता के पास जा चुके हैं (स्वर्गारोहण) और उनकी जगह सत्य का आत्मा आ चुका है (पेन्तेकोस्त)। इसी क्रम में 5 जून को आगरा के समस्त गिरजाघरों ने मिलकर जश्ने-रूहे-पाक समारोह मनाया। स्थानीय समन्वयक डॉ. राजू थॉमस और उनकी कर्मठ टीम को हमारा शत-शत नमन्। ईश्वर को कोटि-कोटि धन्यवाद कि हमारे यहाँ स्थानान्तरण को लेकर कोई भाई-भतीजावाद नहीं चलता, अन्यथा हम भी साम-दाम, दण्ड-भेद का इस्तेमाल करके अपने प्रियों की अयोग्यता को दरकिनार करते हुए उन्हें महत्वपूर्ण पदों पर आसीन कर देते।

31 मई को हमारी बहुत से पल्लियों और मसीही कालोनियों में माता मरियम के आदर में माला विनती जाप, आराधना कार्यक्रम और रात्रि जागरण आयोजित किये गये। कुतलूपुर (सेंट मेरीज़ पल्ली, आगरा) की कु. अलका लुईस इस सम्बन्ध में हमारी विशेष बधाई की पात्र हैं। ऊपर और नीचे के पादरी टोला (क्रिश्चियन कालोनियों) में भी विशेष जलसों के अद्‌भुत समारोह आयोजित किये गये। काश! हमारे पुरोहित और धर्मसंघी भी इसमें बढ़-चढ़कर भाग लेते।

फादर संतोष डीसा और उनकी अनुभवी टीम द्वारा पारिवारिक बाइबिल प्रश्नोत्तरी (3) के परिणाम और विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जा रहे हैं। सभी विजेताओं को बधाई और बाकियों को सलाह, 'लगे रहो मुन्ना भाई/मुन्नी बहनों।'

उत्तर प्रदेश हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट बोर्ड में हमारी छात्राओं ने एक बार फिर बाज़ी मार ली है। सच ही कहा गया है- **''म्हारी छोरियां छोरों से कम नहीं हैं!''** बिना मेहनत किए पास हो जाने वाली छात्राओं को भी हमारी बधाई!

सिस्टर क्लेमेण्टीन (आर जे एम) अपना एक अनुभव हमारे साथ शेयर कर रही हैं। आप भी अपने खट्टे-मीठे अनुभव हमारे पाठकों के साथ बांट सकते हैं... आप बतायें, हम छापेंगे।

सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी, आगरा में सभी छोटे-बड़े ब्रदर्स का विशेष ग्रीष्मकालीन शिविर समाप्ति पर है। दो बार क्रिकेट मैच भी खेले जा चुके हैं दोनों बार फादर्स को मुँह की खानी पड़ी है। नये शैक्षिक वर्ष में बम्पर संख्या में नये रंगरूटों के आगमन की उम्मीद की जा रही है। फादर रेक्टर बाँहे पसारे उनके आगमन की बाँट जोह रहे हैं, लेकिन किसी ने सलाह दी है **''डॉन्ट काउण्ट योर चिकिन, बिफोर दे आर हैच्ड!''**

अग्रेडियन्स परिवार अपनी सह-सम्पादिका श्रीमती निशी अगस्टीन को उनके पति श्री अगस्टिन विलियम के आकस्मिक निधन पर शोक संवदेना प्रकट करता है और उनकी आत्मशांति के लिए प्रार्थना करता है।

ख्रीस्त में आपका,

**फादर यूजिन मून लाज़रस** (कृते, अग्रेडियन्स परिवार)

# Shepherd's Voice

On June 23 we celebrate the Solemnity of the Nativity of John the Baptist. I take this opportunity to congratulate all those who have John the Baptist as their patron. He was an extraordinary saint and the celebration of his Jayanti itself is an extraordinary thing. For, in the Catholic Church the day of a saint's departure from the world is celebrated as his/her feast. The 'Jayanthi'of a saint is not celebrated. The exceptions are Jesus the incarnate Son of God, his most Holy Mother Mary and St. John the Baptist.

His birth took place due to a special intervention of God as he had to be the precursor of the Anointed One. He was born to Zechariah and Elizabeth in their old age when they had already given up the hope of ever having a child. His birth proves the axiom: God hears all our prayers and in his time he makes all things beautiful.

John was a prophet of extraordinary humility. At a time when people were doing everything possible to appear before the world bigger and greater than what they were, he had the humility to say that he was not worthy to untie the thong of the Messiah's sandal. At a time when people were dying to be in the limelight and were ready to trample on and even eliminate others to be on the top, he preferred to be a counter sign and said, "He must increase and I must decrease." A truly humble person is able to say, "I am what I am by the grace of God." Or, "The almighty has done great things for me." A truly humble person is able to accept gratefully his/her self as God's gift and is able to submit himself/herself to God's loving plans knowing fully well that they are better than one's own.

John was a prophet of exceptional courage. He was ready to denounce the Pharisees and Sadducees-powerful and influential groups in the then Jewish society-because they were hypocrites (Mt 23:15), blind leaders of the blind (Mt 15:14) and wicked in that their hearts were full of murder (Jn 8:37). He called them to repentance and warned them against God's judgement.

Inspired and strengthened by God's Holy Spirit he chastised the despotic King Herod and told him that it was not lawful for him to have his brother's wife (Mk 6:18). John is a glowing example for Christian courage which is the willingness to say and do the right thing regardless of the earthly cost.

Let the life and message of John the Baptist lead us to true repentance for our sins, help us love Jesus more and more and give us strength and courage to give witness to his mercy!

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

# महाधर्माध्यक्ष का संदेश (संक्षिप्त रूप)

23 जून को हम संत योहन बपतिस्मादाता के जन्म का महोत्सव मनाते हैं। इस अवसर पर मैं उन सभी को बधाई देना चाहता हूँ, जो संत योहन बपतिस्मादाता को अपना संरक्षक संत मानते हैं। वह एक विशेष व्यक्ति थे। उनकी जन्म जयन्ती मनाना भी अपने आप में विशेष है। काथलिक कलीसिया किसी भी संत का पर्व (त्योहार) उनके इस दुनिया से जाने की तारीख (मृत्यु के दिन) को मनाती है। किसी भी संत की जयन्ती नहीं मनाई जाती है। ईश्वर के देहधारी पुत्र येसु, उसकी अति पवित्र माँ मरियम और संत योहन बपतिस्मादाता ही अपवाद मात्र है, जिनकी जयंतियाँ मनाई जाती हैं।

उनका जन्म भी ईश्वर के एक विशेष हस्तक्षेप (दखल) के कारण हुआ, क्योंकि उन्हें अपने पुत्र के आगे एक अग्रदूत को भेजना ही था, जो उसका मार्ग तैयार करे। वह अपने वृद्ध माता-पिता, एलिज़ाबेथ और ज़करिया की वृद्धावस्था की संतान था। उसका जन्म भी तब हुआ, जब माता-पिता दोनों की पुत्र-प्राप्ति की आशा क्षीण हो चुकी थी। ईश्वर हमारी करुण प्रार्थनाएं सुनता है और अपने समय और अपने दैवीय विधान के अनुसार सब कुछ सुन्दर बना देता है।

योहन विनम्रता का एक विशिष्ट भविष्यवक्ता था। उसने समस्त यहूदी जाति के साथ बड़ी विनम्रता के साथ यह स्वीकार किया था, कि वह न तो मसीह था, न एलियाह और न ही कोई नबी। इस प्रकार उसे समस्त यहूदी राष्ट्र का आदर और सम्मान प्राप्त था। उस समय जब लोग स्वयं को बड़ा और दूसरे से महान बनने की कोशिश कर रहे थे, तब योहन ने विनम्रतापूर्वक यह स्वीकार किया कि वह तो मसीह के जूतों के फीते खोलने योग्य भी नहीं था। उस समय जब लोग प्रकाश में आना चाहते थे, दूसरों का दमन कर रहे थे और यहाँ तक कि दूसरों को रास्ते से हटाने में भी नहीं झिझकते थे, तब योहन ने एक विरोधाभास प्रस्तुत किया और कहा, ''वह (प्रभु) बढ़े और मैं घटूँ।'' वास्तव में वह एक अत्यन्त मृदुल एवं विनम्र मनुष्य था, जो यह कह सकता था, ''मैं हूँ, जो हूँ, ईश्वर की अपार कृपा से।'' अथवा ''सर्वशक्तिमान ने मेरे लिए महान कार्य किए हैं।'' एक सच्चा विनीत व्यक्ति, जो कृतज्ञतापूर्वक अपने जीवन में ईश्वर की इच्छा/योजना को अपने लिए स्वीकार कर लेता है, क्योंकि उसे यह पूर्ण विश्वास था कि ईश्वर की योजना, उसकी अपनी व्यक्तिगत योजनाओं से कहीं बेहतर और उच्चकोटि की हैं।

योहन एक विशेष साहस से भरपूर नबी था। नबी ईश्वर की बात लोगों को बताता और उसकी योजनाओं को समझाता है। बालक सामुएल की तुलना में योहन ईश्वर की बात और उसकी मर्जी को समझता था। वह ईश्वर के सन्देश की घोषणा करने में जरा भी नहीं झिझका। वह फरीसियों और सदूकियों के शक्तिशाली और प्रभावशाली दलों का यहूदी समाज में बहिष्कार और परित्याग करने को तैयार था- क्योंकि वे ढोंगी थे (मत्ती 23:15), अन्धों के अन्धे नेता थे (मत्ती 15:14), उनके हृदय पाप से दूषित थे और मन में हत्या के विचार थे (योहन 8:37)। योहन उन्हें प्रायश्चित करने के लिए आह्वान करता है और ईश्वर के न्याय के प्रति सावधान करता है।

ईश्वर की पवित्र आत्मा से संचालित व शक्ति पाकर वह निरंकुश राजा हेरोद को चेतावनी देता है और उससे कहता है, कि ''यह उसके लिए उचित नहीं था, कि वह अपने भाई की पत्नी को रखे'' (मरकुस 6:18)। योहन ख्रीस्तीय साहस का एक चमकता दमकता उदाहरण है, जो सांसारिक ऐशो आराम की परवाह न करते हुए उचित समय पर उचित निर्णय लेने को तैयार रहता है।

योहन बपतिस्मादाता का जीवन और सन्देश हमें अपने पापों के लिए सच्चा पछतावा, येसु से अधिकाधिक प्रेम करने को प्रेरित करे। हमें शक्ति और साहस प्रदान करे कि हम उसकी कृपा की सच्ची साक्षी दे सकें।

प्रभु में आपका,

✠ **राफी मंजलि**

(महाधर्माध्यक्ष, आगरा महाधर्मप्रांत)

# MESSAGE OF HIS HOLINESS POPE FRANCIS FOR THE 56th WORLD DAY OF SOCIAL COMMUNICATIONS

## Listening with the ear of the heart

Dear brothers and sisters,

Last year we reflected on the need to "Come and See" in order to discover reality and be able to recount it beginning with experiencing events and meeting people. Continuing in this vein, I would now like to draw attention to another word , "listen", which is decisive in the grammar of communication and a condition for genuine dialogue.

In fact, we are losing the ability to listen to those in front of us, both in the normal course of everyday relationships and when debating the most important issues of civil life. At the same time, listening is undergoing an important new development in the field of communication and information through the various podcasts and audio messages available that serve to confirm that listening is still essential in human communication.

A respected doctor, accustomed to treating the wounds of the soul, was once asked what the greatest need of human beings is. He replied: "The boundless desire to be heard". A desire that often remains hidden, but that challenges anyone who is called upon to be an educator or formator, or who otherwise performs a communicative role: parents and teachers, pastors and pastoral workers, communication professionals and others who carry out social or political service.

**Listening with the ear of the heart**

From the pages of Scripture we learn that listening means not only the perception of sound, but is essentially linked to the dialogical relationship between God and humanity. "Shema' Israel - Hear, O Israel" (Dt 6:4), the opening words of the first commandment of the Torah, is continually reiterated in the Bible, to the point that Saint Paul would affirm that "faith comes through listening" (cf. Rom 10:17). The initiative, in fact, is God's, who speaks to us, and to whom we respond by listening to him. In the end, even this listening comes from his grace, as is the case with the newborn child who responds to the gaze and the voice of his or her mother and father. Among the five senses, the one favoured by God seems to be hearing, perhaps because it is less invasive, more discreet than sight, and therefore leaves the human being more free.

Listening corresponds to the humble style of God. It is the action that allows God to reveal himself as the One who, by speaking, creates man and woman in his image, and by listening recognizes them as his partners in dialogue. God loves humanity: that is why he addresses his word to them, and why he "inclines his ear" to listen to them.

On the contrary, human beings tend to flee the relationship, to turn their back and "close their ears" so they do not have to listen. The refusal to listen often ends up turning into aggression towards the other, as happened to those listening to the deacon

Stephen who, covering their ears, all turned on him at once (cf. Acts 7:57).

The Lord explicitly calls the human person to a covenant of love, so that they can fully become what they are: the image and likeness of God in his capacity to listen, to welcome, to give space to others. Fundamentally, listening is a dimension of love.

This is why Jesus calls his disciples to evaluate the quality of their listening. "Take heed then how you hear" (Lk 8:18): this is what he exhorts them to do after recounting the parable of the sower, making it understood that it is not enough simply to listen, but that it is necessary to listen well. Only those who receive the word with an "honest and good" heart and keep it faithfully bear the fruit of life and salvation (cf. Lk 8:15). It is only by paying attention to whom we listen, to what we listen, and to how we listen that we can grow in the art of communicating, the heart of which is not a theory or a technique, but the "openness of heart that makes closeness possible" (cf. Apostolic Exhortation Evangelii Gaudium, 171).

**Listening as a condition of good communication**

There is a kind of hearing that is not really listening, but its opposite: eavesdropping. In fact, eavesdropping and spying, exploiting others for our own interests, is an ever-present temptation that nowadays seems to have become more acute in the age of social networks.

The lack of listening, which we experience so often in daily life, is unfortunately also evident in public life, where, instead of listening to each other, we often "talk past one another". This is a symptom of the fact that, rather than seeking the true and the good, consensus is sought; rather than listening, one pays attention to the audience. Good communication, instead, does not try to impress the public with a soundbite, with the aim of ridiculing the other person, but pays attention to the reasons of the other person and tries to grasp the complexity of reality. It is sad when, even in the Church, ideological alignments are formed and listening disappears, leaving sterile opposition in its wake.

In reality, in many dialogues we do not communicate at all. We are simply waiting for the other person to finish speaking in order to impose our point of view. In these situations, as philosopher Abraham Kaplan notes, [3] dialogue is a duologue: a monologue in two voices. In true communication, however, the "I" and the "you" are both "moving out", reaching out to each other.

It is only by putting aside monologues that the harmony of voices that is the guarantee of true communication can be achieved. Listening to several sources, "not stopping at the first tavern" - as the experts in the field teach us - ensures the reliability and seriousness of the information we transmit. Listening to several voices, listening to each other, even in the Church, among brothers and sisters, allows us to exercise the art of discernment, which always appears as the ability to orient ourselves in a symphony of voices.

The ability to listen to society is more valuable than ever in this time wounded by the long pandemic. So much previously accumulated mistrust towards "official information" has also caused an "infodemic", within which the world of information is increasingly struggling to be credible and transparent. We need to lend an ear and listen profoundly, especially to the social unease heightened by the downturn or cessation of many economic activities.

The reality of forced migration is also a complex

issue, and no one has a ready-made prescription for solving it. I repeat that, in order to overcome prejudices about migrants and to melt the hardness of our hearts, we should try to listen to their stories. Give each of them a name and a story. Many good journalists already do this. And many others would like to do it, if only they could. Let us encourage them! Let us listen to these stories! Everyone would then be free to support the migration policies they deem most appropriate for their own country. But in any case, we would have before our eyes not numbers, not dangerous invaders, but the faces and stories, gazes, expectations and sufferings of real men and women to listen to.

**Listening to one another in the Church**

In the Church, too, there is a great need to listen to and to hear one another. It is the most precious and life-giving gift we can offer each other. "Christians have forgotten that the ministry of listening has been committed to them by him who is himself the great listener and whose work they should share. We should listen with the ears of God that we may speak the word of God" [4]. Thus, the Protestant theologian Dietrich Bonhoeffer reminds us that the first service we owe to others in communion consists in listening to them. Whoever does not know how to listen to his brother or sister will soon no longer be able to listen to God either. [5]

The most important task in pastoral activity is the "apostolate of the ear" - to listen before speaking, as the Apostle James exhorts: "Let every man be quick to hear, slow to speak" (1:19). Freely giving some of our own time to listen to people is the first act of charity.

**- Franciscus**

**Rome, Saint John Lateran, 24 Jan 2022,**
**Memorial of Saint Francis de Sales**

## मंज़िल करीब है!

थके हो, हारे हो, लेकिन रुकना नहीं
मंज़िल करीब है,
पतझड़ बीत गया अब
रैना करीब है,
निराशा आई है तो जानो
आशा करीब है,
लौ जली है जो उम्मीद की तो
धहकने के लिए
सफलता की आग करीब है,
जोश का गुबार उठे तो
हल करने के लिए सौ मुद्दे करीब हैं,
शोर सुनाई दे जहाँ से तो
मान लेना एक मजबूत आवाज़ करीब है,
जनता में हाहाकार सुनाई दे तो
जानो असंतुलित सत्ता करीब है,
रूढ़िवाद, परिवारवाद जैसे शब्द सुनाई दें तो
जानो अस्वस्थ सोच करीब है,
जहाँ धर्म आपस में बँटते दिखें तो
जानो अधिनायकवाद करीब है,
बस अब खत्म करे
राष्ट्र ने नवयुवकों को ये आवाज़ लगाई है,
और उपदेश की बात सुनाई है,
इस क्षण में ही तुम कुछ कर दिखलाओ
जो युवावस्था बीते तो, वृद्धावस्था करीब है।

**नैन्सी पाले, सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा**

# 'BROKEN to OPEN' - The Sacred Heart of Jesus

Prior to this, seldom did it happen that incessant prayers went unanswered, that I was left at the mercy of circumstances, that I had to let down all my guards, that I had nothing else but to surrender, **that my heart was totally broken!**

But now, in the most sensitive and endearing area of my life, I was left utterly helpless, hopeless, broken and wounded! **So much so that I keep wondering still, what good lesson does this heartbreak hold in store for me?**

One of our teachers was sobbing and sharing with me last week as to how she had been struggling with her heartaches while experiencing years of miscarriages and infertility.It is a hard mountain to climb. To desire and want a baby so badly that it reaches down into every aspect of your life, **replacing what should be joy with a deep longing.**We can understand what it means to want something so intensely that it consumes your thoughts. We know what it means to cry because you want to hold your baby and you can't- *not this side of heaven!*

She shared how she is having a lot of trouble being around people. She mentioned that she was with a group of friends recently and one of them announced that she was pregnant.**She said she fought the urge to get up and leave.** Of course she did!

Our Faith tells us to accept these pains, let go and surrender. But, of course, **acceptance and surrender is not something that happens overnight.** It is also something that does not happen during the happy times of our life. These lessons are learned through tears and heartaches;in times of loneliness, depression, anxiety and fear.

If I accept my helplessness in that specific area of my life, will I stop feeling this intense pain?If that teacher accepts her situation, will she be able to rejoice with her pregnant friend without wishing it was her? **I don't think so.** Of course, it would bring in a sense of peace, but it would be asking too much to completely erase these intense feelings. **Perhaps these intense feelings remain to be used by God.**

Paul talks about a thorn in his flesh and how he prayed three times that God would remove it. Now, remember who Paul was. He performed miracle after miracle. He witnessed the hand of God and the saving grace of Jesus a thousand times. **If anyone were to pray and achieve results, it would be Paul. Yet, God refused to take away that thorn in his flesh. Why?**

*"And he said to me, my grace is sufficient for you: for my strength is made perfect in weakness." (2 Corinthians 12:9)*

Is it possible that even a great man of faith like Paul had to be reminded that his strength comes from God and God alone?How often do I struggle on my own? **How often does my independent nature take over and try to instruct God rather than simply follow?** Don't I reject the pain in my life in an effort to remain secure in my own ways?

Yes, I would still feel twinges of pain. Like Paul's thorn, those twinges must remain because they would keep me constantly seeking out God's strength.Can I think of anything that would bring me closer to God than having such a strong need?

*May be our weaknesses remain*

*weaknesses, so that our strength lies in Him alone.*

**Grieve your weakness.** Whatever your weakness looks like, allow yourself to cry and experience the painful emotions necessary to heal.

**Don't underestimate the power of acceptance.** When we accept our hurt, we can go to God with it. *Remember,God has not forsaken you in your hurt.* He is simply standing by your side waiting for you. He cannot help you if you do not hand Him over your pain.

**Don't take it back.** Yes, the triggers will come. Yes, you will hurt, but leave it at the feet of Jesus. Don't take it back when the emotions sweep over you.

**Accept God's strength.** When you give your weakness to Jesus, he surrounds you with strength. Your weakness is then used for His glory. His light shines brighter through you. You can,then, reach out a hand to your neighbor and say, *"My God strengthened me, and He can strengthen you too!"*

Friends, only when we have trusted and broken our heart enough times, will we reach a point where we'll realize that loving and trusting God is not a game of defenses. 'Loving God' is a space where we have to drop all our guards. We can love Him freely, only if we are not afraid to have our hearts, BROKEN. **"You have to keep breaking your heart until it opens",** says Rumi, the great Sufi mystic.

As we celebrate the **feast of the Sacred Heart of Jesus,** that was brutally wounded and afflicted for love of each one of us, let's take a look at our struggles and make a decision, ***"Will we continue to struggle or will we allow this 'thorn' to bring us God's strength?"***

*I pray this takes each one of us, one step closer to learning how to embrace God's strength in our weakness and allow Him to use it for His glory! Amen!*

***Happy Feast of the Sacred Heart!***

**Sr. Rekha Punia, UMI**
Nirmala Provincialate, Greater Noida

# Pope announces 21 new Cardinals from around the world

Pope Francis announced 21 new Cardinals at a Consistory on Saturday, 27 August. They represent the Church worldwide, and reflect a wide variety of cultures, contexts and pastoral ministries.

At the conclusion of the Regina Coeli on Sunday, Pope Francis said that on Saturday, 27 August, he held a Consistory for the creation of new cardinals.

He also said that he would meet during the next two days - on Monday and Tuesday, 29-30 August - with all the cardinals to reflect on the new Apostolic Constitution Praedicate evangelium.

The College of Cardinals currently consists of 208 Cardinals, of whom 117 are electors and 91 non-electors. As of 27 August, the number will grow to 229 Cardinals, of whom 131 will be electors.

Eight of the newly named Cardinals are from Europe, six from Asia, two from Africa, one from North America, and four from Central and Latin America.

# परमेश्वर का प्रेम

परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र तक दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए (यूहन्ना 3:16)

तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की, और परमेश्वर ने उनको आशीष दी और उनसे कहा, ''फूलो-फलो और पृथ्वी पर भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो।'' (उत्पत्ति 27:28)।

परमेश्वर ने इस मनुष्य जाति से अपने दिलो-जाँ से मौहब्बत की कि वह अनन्त जीवन पाए और कभी नाश न हो और आशीर्वाद दिया कि फलो-फूलो और सारी पृथ्वी में भर जाओ। देखा जाए तो सारी सल्तनत का सुल्तान बना दिया कि सबको अपने वश में कर लो। विचार करें कि क्या हमने खुदा की बात का सदुपयोग किया। खुदा ने तो अपनी मौहब्बत में इस मनुष्य पर सब कुछ लुटा दिया और कहा, जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूँगा, ताकि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो (यूहन्ना 14:13)।

जब प्रभु यीशु येरूसलेम में प्रवेश करते हैं तो लोग पुकार-पुकार कर कह रहे थे, दाऊद के वंशज की होसान्ना, धन्य है वह जो प्रभु के नाम पर आता है, आकाश में होसान्ना। जब यीशु ने येरूसालेम में प्रवेश किया तब सारे नगर में हलचल मच गई। लोग पूछने लगे कि यह कौन है? (मत्ती 21:9-10) लेकिन जब यीशु को पकड़वाया गया तथा तब सारे शिष्य भाग गये वह होसान्ना कहने वाले भी भाग गये, केवल चन्द महिला ही थीं जो अन्त तक यीशु के साथ हुए जुल्मों को देख रही थीं, क्या हम प्रभु से ऐसा ही प्रेम करते हैं जिसमें कपट और स्वार्थ मिश्रित है। जो पतरस प्रभु यीशु का तीन बार इंकार कर गया कि मैं इसे नहीं जानता हूँ, उसी पतरस से प्रभु पूछ रहे हैं, हे सिमोन यूहन्ना के पुत्र क्या तू इन शिष्यों से बढ़कर मुझसे प्रेम करता है? उसने यीशु से कहा, ''हाँ प्रभु आप तो जानते हैं कि मैं आप से प्रेम करता हूँ, यीशु ने कहा, मेरे मेमनो को चरा।'' (यूहन्ना 21:15)

अतीत का धुआँ वर्तमान के रोशनदान से कितना ही छनकर बाहर क्यों न निकल जाए उसका विषैलापन अदृश्य सा कहीं न कहीं मन के किसी कोने में परत-दर-परत उपस्थित रहता है। संसार में सबसे बोली जाने वाली भाषा प्रेम की ही भाषा है, जिसे पशु, पक्षी व प्रत्येक जीव भी समझते हैं। प्यार किसी भाषा या डिग्रियों का मोहताज नहीं है, प्यार किसी की उपस्थिति या अनुपस्थिति का भी मोहताज नहीं है, प्यार एक खुशबू है जो छिपाने से नहीं छिपती और बिना दिखाए भी दिखाई दे जाती है और बिना बोले भी सुनाई दे जाती है। क्या संसार ने प्रभु से ऐसा प्यार किया, नहीं किया, लेकिन प्रभु ने संसार से ऐसा प्यार किया। मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है, वह मन की सब बातों की खोज करता है। (नीतिवचन 20:27)

अतीत की खिड़कियों पर लगे जालों को हटाने के लिए संभावनाओं के धागे पर्याप्त नहीं होते, हौंसलों की लाठी और तरकीबों की दुनिया अपने दिमाग की छोटी सी पोटली में सहजनी पढ़ती है। हमारी उम्मीद की किरणें इतनी तेज़ होती हैं कि धुएं में भटकता हुआ शख्स भी धुएं के उस पार बहुत दूर तक एक लम्बे अंतराल के पश्चात पहुंचने में सफल हो जाता है, और वहां होता है एक खुला आसमान जो बांहे फैलाकर सुकून भरी जिंदगी में हमारा इन्तजार कोई करता होता है। परमेश्वर महान है वह बाहें फैलाकर हमारा इन्तजार कर रहा है।

**शेष पृष्ठ 11 पर**

# The Power of the Blood of Jesus

As Christians, we know about the blood, sing hymns about the blood, and remember it during communion. But how many of us truly know how deep its power runs, and all that it has provided for us? Even more important- how many of us use it and apply it in our lives every day? From Genesis to Revelation, the word the blood is kept before our eyes-a reminder of its importance and significance to God and to us. The sacrifices of Able, Noah and Isaac, and the Passover lamb, and the giving of the law all came to pass, but "not without blood". The blood symbolizes cleansing and purification-the settling of a matter. God is love. And the greatest expression of his love towards us is the blood of Jesus. That love covers every need man has had or ever will have, and every time we apply the blood, we experience an outpouring of this love. It is love, through the blood, that has created a barrier between you and all the works of the devil. Let's elevate the blood of Jesus to the same place in our hearts that it has in God's heart-and awaken in our spirits those powerful things the blood has procured for us. The power of the blood of Jesus has provided everything you need to live a life of victory, including redemption, fellowship, healing, protection and authority over the devil.

**Redemption through the Blood of Jesus:**

"We have redemption through His blood". - Eph 1:7

You know the story. Satan came to Adam's wife, Eve, in the form of a serpent and deceived her into disobeying God. Adam followed suit and did what Satan told him to do instead of obeying God. When he did that, he made Satan his Lord, in bowing his knee to Satan the illegitimate ruler of the earth. From that day on- everything changed. With one trespass, death was passed on to all men [Rom5; 12]. The earth and everything in it was suddenly cursed and man was separated from God by sin. Sounds unfixable, right?

**But God has a plan**

His plan of Redemption was the same as it was for Able, Moses and Noah-it would be through the shedding of blood. Such great redemption for all mankind. For eternity, could not be accomplished through the blood of just a goat or ram. Redemption of this magnitude required a much greater sacrifice-the blood of his son Jesus. The greatest thing the blood of Jesus accomplished was this it washed all sin away and made you clean and pure, white as snow. From the minute you receive Jesus as Lord of your life, God will not remember any past sin in your life. That's how powerful the blood is. **The best part?** You don't have to earn and pay for what has been provided on the cross. In fact, you couldn't earn it even if you tried. The best thing you can do is joyfully accept this free gift.

**Fellowship with God through the Blood of Jesus:**

Fellowship is closeness-a friendship. That's what we have with God, but it was bought with a price. Before Adam fell in the Garden of Eden, he had enjoyed friendship and fellowship with God. After Adam's fall, sin separated us from this precious fellowship and could only be restored through the blood of Jesus. Because of the power of the blood of Jesus, you can come boldly into the presence of god. The blood of

Jesus builds a mighty wall between sin and believers who have been made the righteousness of God through Jesus.

**Healing through the Blood of Jesus:**

"By His stripes we are healed." --- Is 53: 5

When you take communion do you think of healing? Most christens take the emblem of the blood and say, 'thank God, we are delivered from sin'. And that is true. Praise God for it he bore spiritual torment for our sins, mental distress for our worry, care sorrow and fear, as well as physical pain for our sickness and disease. The stripes He bore and the blood He shed were for our healing. If you need healing today, the blood of Jesus is free and without side effects. You don't need a prescription, you don't need an appointment, and you don't have to check with your insurance company. Jesus provided it all through the blood. You can appropriate the blood of Jesus today in the Holy Eucharist.

**Protection through the Blood of Jesus:**

In Exodus, after nine devastating plagues, pharaoh still refused to let God's people go. So, God sent a final plague one of judgment to "smite all the first born in the land of Egypt" [EX 12:12]. As sons of Adam, Satan knew the children of Israel had broken covenant with God and also due judgment. God could protect them, but "not without blood". They had a covenant relationship with God through Abraham, but they needed to stand in that covenant. They needed to choose the covenant over the curse. So, God instructed them to take the blood of the lamb and paint it on their doorposts. They did, and the angel of death passed them by. Was it really the blood of a lamb that stopped them from being killed? No it was the blood of the lamb {JESUS} who was slain from the foundation of the world. The blood of the lamb is inexhaustible and never ending. It is an unlimited supply. When we apply the blood of Jesus to the doorposts of our lives in faith, we access the power to defeat every part of the curse that tries to take residence. When you speak the name of Jesus in the face of sickness, disease or danger, the blood of the lamb is behind it, and you are protected.

**Prayer:**

Lord Jesus, by faith in your merits, I now take your precious blood and sprinkle it over myself and my family right from the crown of my head to the very soles of my feet. I claim total and complete protection for my life and my family. Lord JESUS, keep me free today from evil, sin temptation, Satan's attacks and afflictions, fear of darkness, fear of man, sickness, diseases, doubts, anger, all calamities and from all that is not of thy kingdom. AMEN.

**- Sr. Shalini, Satyaseva Sister,**
**St. Peter's College Campus, Agra**

**पृष्ठ 9 का शेष**

जब एलीशा मर गया और उसे मिट्टी दे दी गई। एक वर्ष के बाद मोआब के दल देश में आए, लोग किसी मनुष्य को मिट्टी दे रहे थे, कि एक दल उन्हें दिखाई पड़ा, तब उन्होंने उस लोथ को एलीशा की कब्र में डाल दिया। एलीशा की हड्डियों को छूते ही वह जी उठा और अपने पांवों के बल खड़ा हो गया (2 राजा 13:20) उन्होंने तो उस लोथ को घबराकर एलीशा की कब्र में डाला था लेकिन परमेश्वर हमारे साथ ऐसे ही चमत्कार करता है जिसे हम अनजाने में समझ नहीं पाते हैं। परमेश्वर हमसे बहुत मौहब्बत करता है। वह उम्मीद करता है कि हम उसकी मौहब्बत को पहचानें और विश्वास करें। प्रभु अपने स्नेह की सुगन्ध से महकता हुआ मेरा कोमल हृदय आपकी उपस्थिति का आकांक्षी है। कृपया पधारकर शुभाशीष प्रदान कर आलोकित करें।

**— एस.बी. सैमुअल, केन्द्रीय विद्यालय, आगरा**

# सौ दिन चले – अढ़ाई कोस —निशी अगस्टीन

हम तो सौ दिन क्या हजारों दिन से यूँ ही चल रहे हैं प्रभु येसु के समय में ही उनके सैंकड़ों अनुयायी यानि ईसाई बन चुके थे। उनके अनुयायियों की बढ़ती संख्या ही तो क्रूस पर उनकी मृत्यु का कारण बनी थी। सांसारिक दृष्टि से देखें तो उनकी मृत्यु की भविष्यवाणी तो उनके जन्म से सात सौ वर्ष पहले ही यशायाह नबी द्वारा हो चुकी थी। खैर मैं यहाँ बात कर रही हूँ सौ दिन चलने की। इस प्रचलित मुहावरे का अर्थ है– साधन सम्पन्न होते हुए भी वहीं के वहीं रहना, उत्तरोत्तर विकास न करना, या धीमी गति से कार्य पालन।

जी हाँ! हम मसीहियों पर यह मुहावरा एकदम सटीक बैठता है, क्योंकि हम बचपन से ही चर्च और घर में प्रभु येसु की शिक्षाओं को सुनते आ रहे हैं; कलीसिया भी समय–समय पर योग्य वक्ताओं को बुला कर प्रार्थना सभा का आयोजन करती आ रही है। चर्च की भी सभी इकाईयों में बहुत से धार्मिक क्रिया–कलाप होते रहते हैं। सेमिनार, आत्मिक जागृति सभा, उत्सव, पर्व, गोष्ठियाँ प्रभु येसु के वचनों का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। लेकिन अफसोस हमने प्रभु वचनों को, उनकी शिक्षा को अपने जीवन में कहाँ तक आत्मसात किया है? चर्च के अन्दर प्रार्थना सभा के दौरान हम एक दूसरे को शान्ति का अभिवादन करते हैं और चर्च के बाहर आकर? जरा सोचिए, क्या यह सच नहीं है कि बाहर आकर एक दूसरे का हालचाल पूछने की भी ज़हमत नहीं उठाते हैं। हाँ देर तक केवल उन्हीं से बतियाते हैं जो हमारी पहचान के दायरे में हों। स्वयं पुरोहितगण, धर्मसंघी भी चर्च छूटते ही उन्हें भी न जाने किस बात की जल्दी है, शीघ्रता से वे प्रस्थान कर जाते हैं? किसी का दु:ख–दर्द सुनने का शायद उनके पास समय नहीं है? कुछ अपनी कहो – कुछ हमारी सुनो, ये बात कहाँ हम सब में। हम भी कहाँ उनकी व्यथा सुनते हैं, उनके जीवन में भी तो समस्याएं होंगी? हम तो बस अपने ही ग्रुप में हँसते मुस्कराते, शोकित होते हैं। हम मिलते हैं तो बस अपने ही क्षेत्र, प्रान्त के लोगों से, अपने पहचान वालों से।

चर्च के बाहर मैं अक्सर देखती हूँ। बस्ती, कम्पाउण्ड का ग्रुप अलग, साउथ क्षेत्र का ग्रुप अलग, बिहार– झारखण्ड, मराठी दल अलग, यू.पी. का झुण्ड अलग और हमारे नए मेहमान गैर ख्रीस्तीय जिनकी संख्या में चर्च में बढ़ती जा रही है (शुभ संकेत) अलग–थलग खड़ा बस चारों ओर के माहौल में सकुचाया सा खड़ा रहता है और तो और अंग्रेजी भाषी अलग, हिन्दी भाषी अपने समूह में। अति आधुनिक गर्दन ऊँची किए अलग तो गरीब तबके के सहमे से अलग– आखिर ये कैसा वचन पालन कर रहे हैं हम? हम पड़ोसी प्रेम कैसे निबाहेंगे? क्या हम केवल चर्च मेम्बर ही बने रहेंगे आखिर मसीही कब बनेंगे? जब हम सब मसीह में एक हैं तो फिर ये दूरी क्यों? हम एक दूसरे के नाम, आवास तक का पता नहीं जानते। फिर कैसे कहेंगे कि वे हमारे ही भाई–बहिन हैं? किसी का एक दूसरे के घर आना–जाना नहीं है, शायद हम ही पाहुनों का स्वागत करने में उदासीन हैं?

बड़ा दु:ख हुआ अभी कुछ समय पहले हमारे ही बीच से एक विश्वासी खुदा के पास चला गया और उसकी अन्तिम मिस्सा तथा शवयात्रा में मुश्किल से सात आठ जन ही थे; महिलाएं एक भी नहीं... क्या वह जाने वाला हमारा मसीह भाई नहीं था? हाँ वह गरीब और बीमार–शराबी था तो क्या? हमारे आसपास क्या आठ दस विश्वासी ही रहते हैं? संसार से रुखसत होते समय तो सब बराबर होते हैं फिर किसी अमीर/वी.आई.पी. की मृत्यु पर चर्च में इतनी भीड़ कहाँ से आ जाती है?

**शेष पृष्ठ 16 पर**

# Online Shopping: An Ethics E-loyalty

**Introduction:**

Quoting Pope Pius XII, September 8, 1957 encyclical letter Miranda Prorsus, the Pastoral Instruction on the Means of Social Communication Communio et Progressio, published in 1971, underlined that point: "The Church sees these media as 'gifts of God' which, in accordance with his providential design, unite men in brotherhood and so help them to cooperate with His plan for their salvation". This remains our view and it is the view we take of the Internet.

As the Church understands it, the history of human communication is something like a long journey, bringing humanity "from the pride-driven project of Babel and the collapse into confusion and mutual incomprehension to which it gave rise (cf. Gen 11:1-9), to Pentecost and the gift of tongues: a restoration of communication, centered on Jesus, through the action of the Holy Spirit". In the life, death, and resurrection of Christ, "communication among men found its highest ideal and supreme example in God who had become man/woman and brother/sister".

**Understanding of Ethics:**

Ethics has to do with good and bad, with right and wrong. It is essential to note that ethics is more than some types of behavior. While it is based on moral rules that influence individual and collective behavior, it is linked with theoretical ethical justifications. The criteria of the ethical quality of a moral rule are its devotion to a predefined duty, the enhancement of utility and social consequences.

**Online Shopping:**

An online approach can be more effective for identifying and reaching online shoppers. Internet is fundamentally transforming the nature of the relationship that businesses have with consumers and the public. While e-commerce has witnessed extensive growth in recent years, consumers concerns regarding ethical issues surrounding online shopping also continue to increase. The vast majority of earlier research on this area is conceptual in nature and limited in scope by focusing on consumers' privacy issues.

Utilization of the internet has become one of the important online marketing channels and medium. Every business individual needs to focus on the customer's perception of improving the security, in order to maintain long term relationship. The customers depend on the internet for gathering the information as well as for purchases electronically and become loyal to the organization or a particular brand of the product they are interested in.

From a business point of view, e-commerce is not restricted to the purchase of a product; it includes communication platforms that a company may offer to its customers over network, from pre- purchase information to after-sale services and support. E-commerce has several cases led to a growth of markets in the direction of perfect markets of financial side. The implication of the internet as a market platform facilitates access to information and reduces barriers to access. Security and privacy is one of the major and important factors of online marketing. For a successful business relationship, security is usually considered as the critical component in the relationship marketing pattern.

**E-loyalty:**

Trust is an important condition of successful commercial transaction. It aims to recognize relevant factors of trust and create how these influence potential buyers' decisions to interact with sellers. Trust is of high significance in e-commerce as customers often have little knowledge of sellers and must deal with doubt, uncertainty and risks. Higher levels of trust lead to more commercial transactions. Strategies to maintain trust are effective in establishing positive frame of mind among consumers, while causes of negative events have a negative impact on consumer mind. Increased internet traffic and the complexity of companies in tracking the traffic have made privacy a vital issue in e-commerce. Trust makes consumers comfortable sharing personal information, making purchases and establishes customer loyalty. E-loyalty intention offers the dependence and identification of the products or services of a web site. E-loyalty is defined as the intention to make repurchase from the same web site.

**Conclusion:**

E-commerce has become an important part of everyday life for consumers during the twenty-first century. The variety of services in e-commerce has broadened in recent years and consumers have adopted those services as part of their everyday lives. An ethical issue such as consumer trust in e-commerce is an individual, local and social matter combined with the technological side. Consumers with horizontal individualism and with horizontal as well as vertical collectivism tend to hold higher awareness of e-seller's ethics.

**- Fr. Alok Toppo, DVK, Bengaluru**

## *O Death! Where is your sting?*

**Tribute to Rev. Fr. Mathew Thundiyil**

*Death strikes...*
*Though sure that it will;*
*It pains when it kills.*
*It kills and carries away.*
*The rest it shatters and scatters*
*To gather and slaughter later.*
*Life and death: the arch-rivals;*
*When the race ends, Death revels.*
*Life mothers death*
*Death smoothers its mother.*
*Life, the seed of Death*
*Grows and begets death*
*Death negates life and yet*
*It is not real, a lie,*
*Death lurks in darkness*
*Like shadow behind master,*
*Life unveils Death 'n' reveals*
*Her own grandure*
*To shame death in all her vanity.*

***Luke M.***
***St. Theresa's School,***
***Kosi Kalan (Mathura)***

# हम येसु के हृदय के समान अपना हृदय बनायें!

प्रिय मित्रों, जैसा कि हम पूरे वर्ष भर बहुत सारे त्योहार मनाते हैं और उन्हीं त्याहारों में से माता कलीसिया येसु के पवित्र हृदय का त्योहार बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाती है। पवित्र हृदय का त्योहार हमें येसु के हृदय के समान अपने हृदय को बनाकर उसे समर्पित करने का आह्वान करता है।

अगर हृदय शब्द पर विचार करें तो हृदय के प्रेम का चिन्ह है और जब हम प्रेम के विषय में बात करते हैं तो हृदय का ज़िक्र करते ही हैं। साधारण रूप से मनुष्य का हृदय सम्पूर्ण प्रेम से भरा नहीं होता है क्योंकि मनुष्य पूर्ण नहीं है और उसमें आध्यात्मिक तथा भावनात्मक त्रुटियां होती हैं। अगर वही प्रभु येसु के हृदय की बात करें तो उनका हृदय मनुष्य के हृदय के समान नहीं होता है। उनका हृदय दिव्य प्रेम तथा सर्वशक्ति सम्पन्न है। अब सवाल उठता है कि जब हमारा हृदय त्रुटियों से भरा हुआ है तो हम भला येसु के हृदय के समान अपने हृदय को कैसे बना सकते हैं? इस प्रश्न का उत्तर यही होगा कि हम ईश्वर की कृपा माँगकर सच्चे प्रेम के माध्यम से अपने हृदय को येसु के हृदय के समान बना सकते हैं। प्रभु येसु ने हमें एक नई आज्ञा दी है कि ''जिस प्रकार मैंने तुम लोगों को प्यार किया, उसी प्रकार तुम भी एक दूसरे को प्यार करो।'' (संत योहन 13:34) हाँ, वास्तव में जब हम प्रभु की आज्ञानुसार अपने मित्रों तथा शत्रुओं से येसु के समान सच्चा प्यार करते हैं तब हमारा हृदय प्रभु येसु के हृदय के समान, प्रभु येसु में, दूसरों के लिए धड़कने लगता है और इस प्रकार हमारा हृदय प्रभु येसु के हृदय के समान बन जाता है।

बाइबिल में संत योहन द्वारा रचित सुसमाचार अध्याय 19 पद संख्या 31 से लेकर 37 तक के खण्ड को ''हृदय का छेदन'' शीर्षक नाम दिया गया है, जिसमें हम पाते हैं कि ''एक सैनिक ने उनके (प्रभु येसु के) बगल में भाला मारा और उसमें से तुरंत रक्त और जल बह निकला।'' जब मैंने बाइबिल के इस वचन पर विचार किया तो मेरे अपने स्वचिंतन के अनुसार प्रभु के छिदे हृदय से निकला रक्त और जल एक नदी के समान लगा जो क्रूस पर से बहा था और आज भी हमारे लिए बहता रहता है। जब कभी भी मानव ने येसु के हृदय से गुहार लगायी है तब-तब रक्त और जल रूपी नदी मानव की ओर प्रभु के हृदय से बहने लगती है और मानव के सभी दु:ख-कष्ट तथा उनके जीवन की सारी शैतानी के हुकुमत का सर्वनाश कर एक नवीन प्राणी बना देता है और इस बात का साक्ष्य जो येसु के हृदय पर विश्वास करता है उससे बढ़कर कोई और नहीं दे सकता है।

हमारा हृदय बहुत सारे दागों से भरा हुआ है। कष्ट, पीड़ा आये दिन हृदय को जख्मी बना देते हैं। हद तो तब हो जाती है जब हमारे अपने तथा विश्वासी जिन्हें हम विश्वास करके अपना सब कुछ बताते हैं दगा देकर हमारे हृदयों को पहले से और पीड़ा दायक बना देता है। लेकिन मेरा यह विश्वास है कि और बहुत सारी आप बीती घटनाओं के विषय में करिश्माई प्रार्थनाओं में मैंने सुना है कि येसु के हृदय से प्रार्थना करने से हमारे सारे दाग मिट जाते हैं। पुन: प्रेम का संचार होने लगता है और हम एक सुंदर प्राणी बन कर ईश्वर के हृदय के दुलारे बन जाते हैं।

संत योहन अपने पहले पत्र अध्याय चार पद संख्या बीस में लिखते हैं कि ''यदि कोई यह कहता है कि मैं ईश्वर को प्यार करता हूँ और वह अपने भाई से बैर करता तो वह झूठा है। यदि वह अपने भाई को, जिसे वह देखता है, प्यार नहीं करता, तो वह ईश्वर को जिसे उसने कभी देखा नहीं, प्यार नहीं कर सकता।'' प्रिय मित्रों जब हम येसु की आज्ञानुसार दूसरों को प्यार करते हैं तब हमारा हृदय येसु के हृदय के समान बन जाता है। हृदय प्रेम का प्रतीक है। जब हम प्यार करते हैं तो येसु स्वयं हमारे हृदय को अपना समझकर बस जाते हैं क्योंकि येसु प्रेम ही है। प्रिय मित्रों, हमें हमेशा येसु के पवित्र हृदय से अपने तथा दूसरों को प्यार करने की शक्ति तथा हृदय की शुद्धता का वरदान माँगना चाहिए जिससे हमें येसु के हृदय में थोड़ी सी जगह मिल जाए और उनके हृदय में पूर्णता को प्राप्त कर सकें।

**— ब्रदर मितेश मार्टिन**
**सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी, आगरा**

# और लिफ्ट रुक जाए...

जी हाँ... आपने सही पढ़ा है...क्या आपने कभी ऐसा अनुभव किया है, कि आप लिफ्ट में हों, और अचानक लिफ्ट चलते-चलते (दो मंजिलों के बीच में) रुक जाए... आपके पैरों तले जमीन नहीं सरकेगी, क्योंकि आप तो पहले ही धरती-आकाश के बीच (झूल रहे) हैं।

क्या आपके साथ ऐसा कभी हुआ है... भगवान न करे कि ऐसा कभी आपके या आपके किसी अज़ीज़ के साथ हो। वैसे मेरे साथ रोम (इटली) में दो बार ऐसा हो चुका है... हालाँकि यूरोप में बिजली कभी फेल नहीं होती। यदि बिजली विभाग को कुछ मरम्मत आदि के लिए बिजली सप्लाई बंद भी करनी पड़े, तो कई दिन पहले आपको समाचार पत्रों के माध्यम से सतर्क कर दिया जाता है।

फिलहाल मैं बात कर रहा हूँ, अपने आगरा की कुछ समय पहले की। देर शाम को हमारे सेंट एंथोनी कान्वेण्ट में सभी सिस्टर्स रात्रि भोज करके अपने-अपने बैरकों में जा चुकी थीं, सिस्टर क्लेमेण्टीन नीचे ही थीं। उन्होंने प्रथम तल पर बने अपने कमरे में जाने के लिए लिफ्ट का इस्तेमाल करने की सोची। लिफ्ट में वे अकेली थीं। लिफ्ट कुछ चलकर ग्राउण्ड और प्रथम तल के बीच रुक गई। सिस्टर बताती है, कि वे तनिक भी विचलित नहीं हुई... उन्हें इससे पहले भी इसी तरह फंस जाने का बड़ा अनुभव हासिल है। उन्होंने बिना समय गंवाए आपातकालीन अलार्म बजा दिया। अलार्म की आवाज सुनकर गेट कीपर मण्डल तुरन्त दौड़े आए लेकिन कर कुछ नहीं पाए। सिस्टर ने कहा, कि इसे खोलो... उसका जवाब था, कैसे और कहाँ से सिस्टर जी, मुझे पता नहीं। तब सिस्टर ने बताया, कि जाकर जेनरेटर चलाओ... बिजली आ जाएगी... लिफ्ट चलने लगेगी और ऐसा ही हुआ... सिस्टर की भविष्यवाणी शत प्रतिशत सही सिद्ध हुई।

लिफ्ट ने सिस्टर को ऊपर पहुँचा दिया... लेकिन जेनरेटर में आग लग गई, जिसे बाद में भाई मोज़ेस सैमुअल और टोरण्ट की टीम ने ठीक कर दिया। ऐसी घटनाएं तो किसी के साथ भी हो सकती है... बस हिम्मत मत हारिए। घबराइए मत।

सिस्टर क्लेमेण्टीन ने अग्रेडियन्स को एक साक्षात्कार में बताया, कि इस तरह की घटनाएं तो उनके साथ कई बार हो चुकी हैं, इसलिए अब उन्हें बिल्कुल भी घबराहट नहीं होती। आप सचमुच में महान हैं सिस्टर। आपको लिफ्ट में फंसे लोगों की संरक्षिका घोषित करने की प्लानिंग चल रही है।

पाठकों, यदि आपके साथ भी ऐसी कोई घटना हुई है, तो उसे हमारे अन्य पाठकों के साथ जरूर शेयर कीजिए। हो सकता है, कि आपकी स्टोरी से बाकी लोगों को हिम्मत और सहारा मिलेगा। डूबते को तिनके का सहारा भी काफी है। **—खबरची**

---

**पृष्ठ 12 का शेष**

हमारा यह दोगला व्यवहार कहाँ तक उचित है? हम कैसे चलेंगे साथ-साथ?

प्रभु येसु कहते हैं- मेरे माता और भाई बहिन वही हैं जो प्रभु वचनों पर चलता है, उसकी आज्ञा का पालन करता है।

तो मित्रों! हम कहाँ उसकी आज्ञा मानते हैं? कहाँ एक-दूसरे से प्रेम करते हैं? जब हम एक-दूसरे से ही अलग-अलग रहेंगे तो उसके सुख-दु:ख में कैसे भागी होंगे?

मित्रों! दुनियादारी के लिए हमारे पास पूरा जीवन पड़ा है मसीही आचरण के लिए अब समय निकालिए। ईश वचनों पर चलने के लिए तत्परता कीजिए। व्यवहारिक रूप से हम एक दूसरे के नजदीक आएं। वचन पढ़ने सुनने से ज्यादा उसे व्यवहार में लाना आवश्यक है। वरना तो हम यूँ ही चलते रहेंगे...सौ दिन...हज़ार दिन... जीवन भर।

# पारिवारिक बाईबिल प्रश्नोत्तरी (3): उत्तरमाला

**इब्रानियों के नाम पत्र**

1 व्यभिचारी, नास्तिक
2 ईश्वर
3 कष्ट, पिता का दण्ड
4 शिविर पर्व
5 पुराना विधान
6 11:1
7 भावों, विचारों
8 शब्द
9 धर्मग्रन्थ
10 मूसा
11 सालेम
12 पवित्रता की साधना
13 फिराउन की पुत्री
14 हाबिल
15 लम्पटों, व्यभिचारियों
16 अन्त:करण
17 भस्म, अग्नि
18 धार्मिकता का शान्तिप्रद
19 सियोन
20 सात दिनों में सात बार
21 भक्ति, श्रद्धा
22 सातवें दिन
23 पवन, धधकती आग
24 पुरोहित
25 4:12
26 13:5
27 गलत
28 10:9
29 एसाव
30 याकूब
31 ईश्वर के कृपापात्र
32 13:8
33 4:12
34 मृत्यु
35 पुत्र
36 सीनई बादल
37 तीन महीनों
38 भ्रातृप्रेम
39 हाथों, घुटनों
40 हेनोख
41 विश्वास के प्रवर्तक, पूर्णता
42 ईश्वर की कृपा
43 4:13
44 नबियों
45 गलत
46 योशुआ
47 मूसा
48 राहब नामक वेश्या
49 हाबिल, कल्याणकारी
50 13:6
51 इटली
52 कलोर की राख
53 आर्शीवाद
54 8:12
55 कड़वा, हानिकर पौधा पनपने
56 यूसुफ
57 मध्यस्थ
58 विवाह, दाम्पत्य
59 महिमा, प्रतिरुप
60 आँखो, निरावरण, खुला
61 पिता एक ही है
62 वसीयतकर्ता
63 दशमांश
64 अटल, दृढ़
65 औरसपुत्र, जारज
66 खोज
67 मूसा
68 वेदी
69 स्वर्गदूतों
70 हारुन
71 अतिथ्य-सत्कार
72 प्रतिज्ञा, सच्चा
73 फाटक के बाहर
74 ईसा का रक्त
75 प्रतिज्ञा, शपथ
76 गलत
77 नम्बर नही है
78 आमेन
79 अवज्ञा
80 घर का निर्माता
81 हाँ, 9:19
82 उत्पत्ति ग्रन्थ, अध्याय 14 में
83 विश्वास, कृपापात्र
84 विश्वास
85 सावधान
86 तिमथी
87 संसार
88 रक्त
89 चालीस
90 अपने से बड़े
91 जीवन्त ईश्वर, भयंकर
92 भरोसे, अनुग्रह के सिंहासन
93 यूदा
94 संहिता
95 मन्दिर-गर्भ
96 मंगलमय
97 यूदा
98 श्रद्धालुता
99 नवीन, जीवन्त
100 अन्याय
101 ईश्वर के घराने
102 ईश्वर से मूसा को
103 अदृश्य, दृश्य
104 संहिता
105 आज्ञापालन
106 हारुन
107 5:5
108 भेंट, बलि
109 मन्ना
110 धार्मिकता का राजा

**सन्त याकूब का पत्र**

1 गलत
2 न्यायकर्ता
3 सही
4 अपने
5 प्रार्थना
6 धन्य समझे
7 मुत्यु
8 कर्मों
9 धार्मिकता
10 न्यायकर्ता
11 सन्देह
12 दया
13 झूठा
14 धर्मात्मा
15 गलत
16 गलत
17 जीभ
18 दुष्ट आत्मा
19 ईश्वर से प्रार्थना करें
20 गलत
21 गुरुओं से
22 मनुष्य का क्रोध
23 शत्रु
24 जीवन का मुकुट
25 शैतान
26 हत्या

**सन्त पेत्रुस का पहला और दूसरा पत्र**

27 मसीह के मूल्यवान रक्त
28 नबी
29 उदाहरण
30 कृपा से वंचित
31 अनुग्रह
32 विश्वास
33 विलम्ब
34 आठ
35 पवित्र आत्मा
36 नहलायी हुई सूअरी
37 पवित्र याजक-वर्ग
38 धन्य

39 बुलावा
40 वासनाओं
41 ईश्वर के शब्द
42 पापी स्वर्गदूतों
43 विश्वास
44 प्रेरित पेत्रुस का पहला पत्र
45 ईश्वर के दिन
46 शारीरिक वासनाओं
47 सोना
48 दुबारा
49 अधीनता
50 नबियों
51 स्वर्ग के सभी दूतों
52 जलमग्न
53 जीवन्त आशा
54 गूँगा गधा
55 सही
56 पवित्र आत्मा
57 स्वर्ग में
58 आत्मा
59 अन्त:करण
60 मुक्ति
61 चोर
62 पवित्र
63 नवजात शिशुओं
64 सम्राट
65 उद्धार
66 नास्तिक
67 ज्ञान
68 गणना ग्रन्थ, 22 में

**सन्त योहन का पहला, दूसरा और तीसरा पत्र तथा सन्त यूदस का पत्र**

69 युग-युगों
70 प्रेम
71 पिता और पुत्र दोनों
72 ईश्वर की आज्ञा
73 महादूत मिखाएल
74 ईश्वर की सन्तान
75 एक दूसरे को प्यार करना
76 निष्पाप
77 परम पावन विश्वास
78 पवित्र आत्मा
79 विश्वास
80 पाप
81 मसीह में
82 काइन
83 भटकाने वाले
84 नमस्कार
85 विधर्मी लोगों
86 सही
87 सत्य की ज्योति
88 प्यार
89 बलआम
90 दियोत्रेफेस
91 विश्वास
92 सही
93 ज्योति
94 जो ईसा को मसीह नही मानता
95 सत्य की सेवा
96 विनाश
97 मसीह-विरोधी
98 जो बुराई करता (दियोत्रेफेस)
99 विश्वास
100 हेनोख
101 हत्यारा
102 अभ्यंजन

**प्रकाशना ग्रन्थ**

1 समुद्र
2 परमपावन, सत्यप्रतिज्ञ
3 मेघ, इन्द्रधनुष
4 पंखदार सर्प
5 जीवन ग्रन्थ
6 आत्मा तथा वधू
7 धार्मिक आचरण, पवित्रता
8 न्याय
9 आग, काँच
10 लाल
11 टिड्डियाँ
12 दाहिने हाथ, पुस्तक
13 पश्चाताप
14 बलआम, बालक
15 धनुष
16 सैनिक
17 दो पंख, साढ़े तीन वर्ष
18 परमपावन
19 एक हजार
20 ईश्वर की महिमा, ज्योति
21 महान बाबुल
22 ईश्वर के क्रोध, मदिरा
23 आकाश का द्वार
24 सात तुरहियाँ
25 अंजन, आँखो
26 1:8
27 ईज़ेबेल
28 प्रतिशोध का महादिवस
29 सात मेघ गर्जन
30 पशु, बयालीस महीनों
31 हरमागेदोन
32 ईश्वर का निवास
33 आमेन
34 आल्लेलूया, राज्याधिकार
35 हँसिया
36 सात हजार
37 जल कड़वा
38 सात
39 समुद्र की तरह
40 निकोलाईयों
41 सात मोहरें
42 टिड्डियों, पाँच महीनों
43 सात, दस
44 ईश्वर के दास मूसा
45 नाम
46 सोने का सरकण्डा
47 पशु, ईश-निन्दक
48 छ:सौ छियासठ
49 आराधकों
50 खजूर की डालियाँ
51 जीवित, मर चुके
52 प्रकाशना
53 गैर-यहूदियों
54 साक्ष्य के तम्बू
55 कोप रुपी अंगूरी
56 सूर्यकान्त, स्फटिक
57 सरकण्डा
58 लोह-दण्ड
59 दो नबी, सताया
60 फरात
61 सियोनपर्वत
62 माथे
63 सन्तों की प्रार्थनाओं
64 सच्चे, न्यायसंगत
65 झूठ, अनिन्द्य
66 दो साक्षियों, बारह सौ साठ दिनों
67 टिकियाँ, बिच्छुओं
68 सातआत्मा
69 सम्मान, सामर्थ्य
70 एक लाख चैवालीस हजार
71 विजयी, द्वितीय मृत्यु
72 धर्मोत्साह
73 टिड्डियों, अश्वों
74 पृथ्वी
75 पुनर्जीवित, एक हजार
76 दाऊद का वंशज
77 पातमोस
78 जीवन वृक्ष
79 सूर्य
80 अग्नि स्तम्भ
81 पशु
82 मेढक जैसे तीन अशुद्ध
83 मृत्यु, अधोलोक
84 पारदर्शी
85 18:13
86 14:13
87 दसवाँ भाग
88 अफसन्तीन
89 3:20

90 योहन
91 राजाओ का पहला ग्रन्थ 16 में
92 गेहूँ, तीन सेर
93 विनाश, विनाशक
94 बारह सौ साठ
95 सावधान
96 पुनरुत्थान
97 चिकित्सा
98 राजाओ का राजा और प्रभुओं का प्रभु
99 मृत्यु, शोक, अकाल
100 बैंगनी, लाल वस्त्र
101 छलटी
102 अभियोक्ता
103 विधाान की मंजूषा
104 सोने, वेदी
105 प्रार्थनाएँ
106 आचरण, ईश्वर की दृष्टि
107 सात
108 वीणा, स्वर्णपात्र
109 फरात, चारदूतों
110 जीवन, मृत्यु
111 तीन खण्ड
112 ईश्वर का शब्द
113 वर्गकार
114 स्रोत
115 पहली मोहर, आओ
116 3:19
117 सिंहासन
118 पूँछों
119 वयोवृद्धों में एक
120 बिच्छुओं
121 पंखदार सर्प, पशु
122 सर्वशक्तिमान था
123 स्वर्ण मेखलाएँ
124 गन्धक
125 प्रेरितों, नबियों
126 अभिशाप
127 21:6
128 4 बार, 19:1,3,4 और 6 में
129 महान, अपूर्व
130 महान बाबुल
131 लाक्षणिक
132 ईश निन्दक
133 गरुड़
134 चौबीस
135 सात
136 मेमने
137 अबद्दोन
138 जीवन ग्रन्थ
139 घृणित, दु:खदायी फोड़े
140 स्वर्ग की सेनाएँ
141 बारह हजार
142 सन्तों का रक्त, साक्षियों का रक्त
143 सन्तों, ईश्वर
144 सोलह सौ
145 संघातिक घाव
146 जैतून के दो पेड़, दो दीपधार
147 3:15
148 एशिया
149 सात कलीसियाओं
150 भूकम्प
151 सात मेघ गर्जनों
152 मिखाएल
153 सन्तों, नबियों
154 17:14
155 21:4
156 विश्वसनीय, सत्य
157 जीभ चबाने
158 ईश्वर के कोप विशाल कुण्ड
159 बारह वर्षों
160 एक सौ चौवालीस
161 मध्य आकाश
162 बुहार
163 बीस करोड़
164 आमेन
165 अधिराज
166 2:23
167 गुप्त रहस्य
168 चन्द्रमा
169 अगाध गर्त, कुंजी
170 सेवकों, नबियों, सन्तों को
171 परिश्रम, सत्कर्म
172 आत्मा, आविष्ट
173 याजकों का राजवंश
174 तराजू
175 ईज़बेल
176 कड़वी, मधु-जैसी मीठी
177 साढ़े तीन दिनों, कब्र
178 महासंकट से निकल
179 प्रश्न नही है
180 प्रभु के दिन
181 मृत्यु
182 विवर
183 सूर्य का वस्त्र
184 व्यभिचार, तीखी मदिरा
185 मलमल, धर्माचरण
186 योहन
187 व्यापारी
188 लालपषु
189 आग, गन्धक
190 बयालीस
191 मेमना, चरवाहा
192 चारों पवनों
193 जागोगे, चोर
194 स्वर्ण मेखला
195 ईज़बेल
196 चन्द्रमा, बारह नक्षत्रों
197 उजला बादल
198 यूनानी
199 कृपापात्र, ईमानदार
200 आराधना
201 दस दिनों
202 1:17
203 पहाड़ों, चिह्नों
204 जब मेमने ने सातवीं मुहर खोली
205 श्रद्धा, स्तुति
206 समुद्र
207 प्रभु ईसा
208 कुंजियाँ
209 मन्ना, सफेद पत्थर
210 पूर्व
211 छ:-छ:
212 महान बाबुल
213 ईज़बेल
214 19:9
215 तारा
216 विश्वसनीय, सच्चा
217 जैतून, अंगूरी
218 ईश्वर की प्रजा
219 ईश्वर से प्रेरणा
220 अन्तिपस
221 कलीसियाओं
222 मरकतमणि, आधा-मण्डल
223 ईबलीस
224 विपत्तियाँ
225 थुआतिरा के लोग
226 ईमानदार, जीवन का मुकुट
227 ईश्वर के मन्दिर
228 धुआँ
229 एक लाख चैवालीस हजार
230 झूठे नबियों

## सामान्य प्रश्न

1 64 (67) ई.
2 दुसरी शताब्दी के तीसरे दशक
3 सिकन्दरिया
4 90 ई.
5 85 ई.
6 एफेसस निवासी शिष्यों
7 प्रथम, अन्तिम दशक
8 यूनानी, प्रथम, अन्तिम
9 सन्त इरेनेयुस
10 सामर्थ्य, सर्वज्ञता
11 ईश्वर के सभी कृपा पात्रों के समूह
12 माता मरियम का स्वर्गोद्ग्रहण का पर्व
13 रोमन साम्राज्य
14 जिसके कान हों सुनले। (13:9)
15 बाबुल
16 अन्तिम विचार
17 गोग और मगोग
18 मूसा का स्वर्गारोहण नामक ग्रन्थ

# Family Bible Quiz 2022 (3): Results

**LAITY**

| S.No. | Name | Parish | Marks obtained | Rank |
|---|---|---|---|---|
| 1. | Manju Kujur | St. Joseph's, G. Noida | 457/460 | I |
| 2. | Hema | St. Peter's, Bharatpur | 456/460 | II |
| 3. | Thomas | St. Peter's, Bharatpur | 456/460 | II |
| 4. | Shashikala | St. Peter's,Bharatpur | 455/460 | III |
| 5. | Sankalp | Nishkalanka Matha, Jaith | 455/460 | III |
| 6. | Rajesh David | St. John's, Firozabad | 455/460 | III |
| 7. | Parveen Shekhar | Cathedral, Agra | 455/460 | III |
| 8. | Nidhi Horo | St. Fidelis, Aligarh | 455/460 | III |
| 9. | Meeka Thomas | St. John's, Firozabad | 455/460 | III |
| | **CONSOLATION PRIZE** | | | |
| 1. | Mariam Soreng | St. Mary's, Noida | 454/460 | |
| 2. | Nancy Paul | St. Mary's, Agra | 454/460 | |
| 3. | Tom K. Mathew | St. Fidelis, Aligarh | 454/460 | |
| 4. | Nisha | St. Joseph's, G. Noida | 454/460 | |
| 5. | Shashi Samuel | St. Fidelis, Aligarh | 454/460 | |
| 6. | Ranjeeta Toppo | Cathedral, Agra | 453/460 | |
| 7. | James Frank | St. Thomas, Sikandra | 453/460 | |
| 8. | Anushka Thomas | St. Thomas, Sikandra | 453/460 | |
| 9. | Karishma | St. Francis Hathras | 453/460 | |
| 10. | Stephan Alexander | Cathedral, Agra | 453/460 | |
| 11. | Divya Baghe | Sacred Heart, Mathura | 452/460 | |
| 12. | Anisha Bara | St. Jude, Kaulakha | 452/460 | |
| 13. | Anita Lawrence | St. Thomas, Sikandra | 452/460 | |
| 14. | Jewel Lakra | St. Fidelis, Aligarh | 452/460 | |
| 15. | Susamma Mathew | St. Theresa, Kosikalan | 452/460 | |
| 16. | S.P. Beck | St. Joseph's, G. Noida | 452/460 | |
| 17. | Bhanu | Cathedral, Agra | 452/460 | |
| 18. | Megha Mathew | St. Mary's, Agra | 451/460 | |
| 19. | Neetu Woodword | Holy Family, Tundla | 451/460 | |
| 20. | Sabu T.J | St. Francis Xavier, Etah | 451/460 | |
| | **RELIGIOUS/PRIESTS** | | | |
| 1. | Br. Pradeep Bara | M.V.P., Etmadpur | 458/460 | I |
| 2. | Fr. Tony D'Almeida | St. Peter's, Bharathpur | 457/460 | II |
| 3. | Fr. Louis Xess | St. Lawrence, Agra | 456/460 | III |
| 4. | Sr. Jositta FSLG | St. Joseph's Convent, G.Noida | 456/460 | III |
| | **CONSOLATION PRIZE** | | | |
| 1. | Br. BalaTejaSagar | M.V.P., Etmadpur | 455/460 | |
| 2. | Sr. Jhancy CHF | Holy Family Convent, Agra | 455/460 | |
| 3. | Sr. Ambrosia M.C | Missionaries of Charity, Agra | 455/460 | |

***Hearty Congratulations to all winners! – Team Agradiance.***

# St. Devasahayam

Devasahayam Pillai is the first Indian layman to get sainthood born on April 23, 1712 in a Hindu upper caste family in Kanyakumari. He worked at Travancore palace. He was an official in the court of Travancore's Maharaja Marthanda Verma when he was instructed into the Catholic faith by a Dutch naval commander.

After converting to Christianity in 1745 he took the name "Devasahayam" which in Malayalam translated to "God is my help". He went on to fight against caste discrimination and while preaching he particularly insisted on the equality of all the people. This aroused the hatred of the higher classes and he was arrested in 1749. After enduring increasing hardship, he received the crown of martyrdom when he was shot on 14 January 1752.

Devasahayam was declared 'Blessed' on December 2, 2012 in Kottor 300 years after his death. He was chosen for the sainthood after a woman in her seventh month of pregnancy testified to a 'miracle' after praying to him in 2013. The women said that her foetus had been declared 'medically dead' and there was no movement. However, she said she experienced movement after praying to the martyr. The Vatican accepted this and recognised Devasahayam for sainthood.

His mortal remains were interred inside what is now Saint Francis Xavier's Cathedral in Kottoor, Nagercoil. In 2004, the diocese of Kottoor along with Tamil Nadu Bishops' Council of India recommended Devasahayam for beatification. He was declared blessed by Kottor diocese in 2012. He was approved for sainthood in February in 2020 for "enduring increasing hardships" after deciding to Christianity while clearing Devasahayam for sainthood in 2020, the Vatican dropped "Pillai" from his name and referred to him as 'Blessed Devasahayam'. This was following the protests that 'Pillar' (Devasahayam's former caste name) defeats the purpose of what Devasahayam stood for, so the Vatican removed it.

Saint Devasahayam stood for equality and fought against casteism and communication. His sainthood comes at a time when India, is facing a surge in communalism. This canonization is a great opportunity for the Church to stand against the prevailing communal poison.

**Jibi Lukose, St. Mary's Church, Agra**

## DATES TO REMEMBER (JUNE-JULY)

**JUNE**

05 B.D. Fr. John D'Cunha
07 D.A. Fr. Johnson C.
10 B.D. Fr. Santiago Raj
11. B.D. Fr. G. Xavier
12 B.D. Fr. Alok Toppo
13 B.D. Fr. Roy Dolphus

**JULY**

01 B.D.Fr. Suresh K. D'Souza
08 B.D. Fr. Johnson M.A.
22 B.D. Fr. Mathew Kumblumoottil
31 B.D. Fr. Viniversal D'Souza

## St. Peter's College, Agra releases Dodransbicentennial (175th Anniversary) Academic Calendar

Agra, 13 May; The year 2021 represents an historic year in the annals of St. Peter's College, Agra: it is the 175th anniversary of the founding of the College. Commemorating this milestone is an occasion to not only look back at where we have been but also to look ahead to what is on the horizon; to remember and appreciate what we have accomplished and assess our impact, land imagine what the institution can become in the future. It is also an occasion to take stock and see what is to be done for the future development of the institution.

The Dodransbicentennial celebrations could not be materialized owing to the pandemic COVID-19. The long series of celebrations that was cancelled last year will now be held during the academic year 2022-23.

Since 1846, St. Peter's College has shaped tens of thousands of students, igniting and transforming their hearts and minds. The Alumni of St. Peter's are spread across the length and breadth of the country and overseas. Over the years they have adorned positions of responsibility at the highest level requiring trust, confidence, ability and character - all of which were nurtured in St. Peter's. But wherever they have been, they have lived up to the motto of the school, Palma Non Sine Pulvere (there is no palm of victory without a struggle). Our inspirational and incredible alumni continue to make an impact on society and the lives of others. They stand up against injustice and explore the shared humanity through different fora in the society.

Many have given their sweat and blood to make the institution what it is today. Those who helmed the institution were men of calibre, character and capabilities and also dedicated spiritual leaders. These pioneers, left no stone unturned to make St. Peter's College an institution to reckon with.

This special calendar reviews and shares the stories of all those luminaries who have helped make St. Pete's College what it is today. The people who were at the helm especially the Bishops, especially the Most Rev. Dr. Joseph Anthony Borghi O C, the founder, his successors and the Principals were visionaries who contributed exponentially to the growth of the institution.

The portraits and photographs that are presented in the calendar give information about our Founder, Rectors, Principals, teachers and all others who have made an impact on St. Peter's. Besides, important phases of St. Peter's

College's rich history are highlighted along with the depiction of everyday life on this sprawling and beautiful campus.

The calendar also sheds light on the activities, both academic and co-curricular, that the College intends to take up during the academic year.

A world of hard work had gone into the making of the Calendar, the brunt was borne by our Principal, Rev. Fr. Andrew Correia, who conscientiously, passionately and painstakingly rummaged through the albums in the archives sifting, screening and arranging the photographs in the order of chronology and importance to which this Calendar is a testimony.

Speaking on the occasion the Principal, Rev. Fr. Andrew Correia, said that it was for the first time in the annals of the College such a calendar was being made which is also a mine of information as far as the history of the College was concerned.

The Principal, Rev. Fr. Andrew Correia, thanked everyone associated with the work namely Dr. Antony A. P., Mrs. Soosy Antony, Mr. Sharad Upadhyay and Mr. Praji Varghese.

Dr. Antony A. P. said, "Though much labour has gone into the making of this calendar no claim to perfection can be made. Shortcomings exist, one of these is that despite sincere attempts, the photographs of some dignitaries who visited the College and teachers who served the institution for long periods could not be obtained."

The calendar was released on 13th May 2022 in a short but solemn function. Mr. Ashfaq Saifi, Chairman, Minority Commission, Govt. of Uttar Pradesh, was the Chief Guest.

Speaking on the occasion the Chief Guest said that he was happy to be in such an institution basking in 175 years of grandeur, glory and excellence, adding that the education imparted in St. Peter's groomed the students to become successful and fruitful citizens of the country.

The programme was anchored by Mrs. Soosy Antony; Mrs. Jennifer N. Singh proposed the vote of thanks. **- Dr. Antony A. P.**

## सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा में नर्सेस दिवस समारोह आयोजित

आगरा, 22 मई। सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा कैण्ट में नर्सेस दिवस मनाया गया। 12 मई को अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस मनाया जाता है। यह अंतर्राष्ट्रीय नर्सिंग काउंसिल द्वारा मनाया जाता है। पवित्र मिस्सा शुरु होने से पहले श्रीमती मॉली जोस ने नर्सेस दिवस के बारे में परिचय दिया, जिसमें उन्होंने यह बताया कि 12 मई को '**नर्स दिवस**' क्यों मनाया जाता है। यह आधुनिक नर्सेस की संस्थापिका दार्शनिक फ्लोरेंस नाइटिंगेल की जयंती है। वह ब्रिटिश समाज सुधारक और व्यवसाय से एक नर्स थी, जो क्रीमियन युद्ध के दौरान घायल सैनिकों की देखभाल के लिए लालटेन लेकर रात में घूमती थीं। उन्होंने नर्स के रूप में घायल सैनिकों की अभूतपूर्व सेवा की। फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने नर्सिंग को मुख्य रूप से महिलाओं के लिए एक व्यवसाय के रूप में परिवर्तित कर दिया।

पल्ली पुरोहित फादर ग्रेगरी मिस्सा के प्रारम्भ में सभी नर्सेस को वेदी तक जुलूस के रूप में लाए और नर्सिंग के बारे में बताया। उन्होंने यह भी बताया, कि नर्सिंग एक महत्वपूर्ण पेशा है और नर्स रोगियों की देखभाल में कितनी

महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कोरोना के समय नर्सेस का कार्य विशेष सराहनीय रहा है। हमें उनका मनोबल बढ़ाने की आवश्यकता है। मिस्सा के बाद सभी नर्सेस को '**नर्सेस डे**' की बधाई दी और उपहारे दिये गये।

**— श्रीमती मॉली जोस, आगरा छावनी**

## जो हमारे 'माननीय' न कर सके, वह एक युवती ने कर दिखाया

आगरा, 31 मई। माता मरियम की एलिज़ाबेथ से भेंट के पर्व और माला विनती महीने के अंतिम दिन पर स्थानीय कुतलूपुर (ईदगाह), आगरा में माला विनती एवं रात्रि जागरण का भव्य समारोह आयोजित किया गया। जहाँ हमारी बहुत सी शहरी पल्लियों में 'ज़िम्मेदार माननीयों' ने यह कहकर कि बहुत गर्मी है, कौन आएगा, कैसे आएगा...आदि बहाने बनाकर माता के आदर में कुछ नहीं किया, वहीं सेंट मेरीज़ चर्च, आगरा के कुतलूपुर की रहने वाली कु. अलका लुईस ने एक जिन्दा मिसाल पेश की, जिसे देखकर अब तो हमें शर्म आ जानी चाहिए। कु. अलका लुईस (पुत्री स्व. श्री लुईस पैट्रिक) ने अपने भाई सन्नी वेल्स एवं कुछ हिन्दू मित्रों आदि के साथ मिलकर माता की चौकी बिठाई और पूरे जोर शोर से माता के आदर में जागरण कर अपने विश्वास की जीवन्त साक्षी दी।

कु. अलका लुईस एवं साथियों ने करीब एक महीने पहले ही इस आयोजन की तैयारी शुरु कर दी थी। एस डी एम, थाना चौकी सभी जगह जाकर सम्बन्धित अनुमति हासिल की। अपने सभी परिवारीजनों को म.प्र., राजस्थान आदि से इसमें भाग लेने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किया। हालांकि अपने ही लोगों ने बहुत अड़चने पैदा कर दीं – जैसा ऐन मौके पर बिजली, पानी की सप्लाई बंद कर दी, फिर खुदा ने दूसरे दरवाजे खोल दिए। दो सौ मीटर लम्बी गली में प्रवेश से ही तोरणद्वार, दरियों, बिजली की रंग-बिरंगी रोशनियों और तेज आवाज में माता के भजनों ने सम्पूर्ण गैर-ईसाई क्षेत्र को भक्तिमय बना दिया। माता की चौकी लगाई गई, जिसके सामने सभी धर्मावलम्बियों ने सिजदा किया, अगरबत्ती-मोमबत्ती फूलमाला, प्रसाद आदि चढ़ाया। कार्यक्रम में फादर मून लाजरस एवं श्री जॉनी पॉल भी उपस्थित रहे।

वेल्स सिस्टर द्वारा प्रस्तुत प्रारम्भ नृत्य के साथ सत्संग शुरु हुआ, तत्पश्चात सभी ने माता मरियम के आदर में माला विनती का जाप किया। तत्पश्चात आर्केस्ट्रा पार्टी व रात्रि 11 से प्रात: 4 बजे तक सिर्फ धार्मिक गीत ही बजाए। भोर में सभी को प्रसाद बांटा गया। इसके साथ ही रात्रि जागरण सम्पन्न हुआ।

कु. अलका लुईस ने एक साक्षात्कार में **अग्रेडियन्स** को बताया, कि उन्हें इस प्रकार के कार्यक्रम करने की प्रेरणा अपने स्वर्गीय पिता श्री लुईस पैट्रिक से मिली, जो स्वयं माता मरियम के एक बड़े भक्त थे। वे प्रतिवर्ष कृपाओं की माता (सरधना) मेरठ की तीर्थयात्रा के लिए लोगों के लिए बस यात्रा की व्यवस्था करते थे और 31 मई को माता मरियम के आदर में रात्रि जागरण तथा 8 सितम्बर को माता मरियम के जन्मोत्सव पर गिरजाघर प्रांगण में शीतल पेय और प्रसाद वितरित करते थे।

कु. अलका लुईस, जो सेंट जोसफ इण्टर कॉलेज, आगरा में एक शिक्षिका हैं हमारी बधाई की पात्र हैं, क्योंकि उन्होंने अपने भाई सनी, ज़ेवियर, लेज़ली व हिन्दू मित्रों देबु और घनश्याम के सहयोग से इतना विशाल

कार्यक्रम आयोजित किया। गिरजाघरों, अपनी कालोनियों, कॉन्वेण्टों और संस्थाओं में धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करना कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि वहाँ सब जन-धन आदि सुविधाएं आपको उपलब्ध रहती हैं, किन्तु एक गैर-ईसाई इलाके में रहकर वहाँ के लोगों के साथ मिलकर इस प्रकार का समारोह आयोजित करना वास्तव में एक बहुत बड़ी चुनौती और प्रशंसा के योग्य बात है। **अग्रेडियन्स** उनको और उनकी पूरी टीम को नमन करता है और महाधर्माचार्य से उनके लिए विशेष आशीर्वाद की अनुशंसा करता है। **— फादर मून लाजरस**

## नौवाँ जश्ने रूहे पाक समारोह सम्पन्नः विश्व और देश में शांति-सद्भाव एवं भाइचारे के लिए प्रार्थना

आगरा, 5 जून। ''शिक्षा और मनोविज्ञान के क्षेत्र में काफी अनुसंधान और प्रगति हुई है, किन्तु आध्यात्म या आध्यात्मिकता के क्षेत्र में कोई विशेष अनुसंधान नहीं किया गया है क्योंकि पवित्रात्मा हमारी पहुँच से बाहर है। हमारे तन-मन का संतुलन होने के साथ-साथ आत्मा का संतुलन भी आवश्यक है... आत्मा से संचालित होकर ही विश्व में शांति सम्भव है। पेन्तेकोस्त का संदेश यही है कि आत्मा से प्रेरित होने से ही शांति, प्रेम, न्याय और सत्य का अनुभव किया जा सकता है'', महाधर्माध्यक्ष डॉ. आल्बर्ट डिसूजा जश्ने रूहे पाक के अवसर पर बोल रहे थे। पिछले आठ वर्षों की भांति इस वर्ष भी आगरा के यूनाइटेड चर्चेज़ ऑफ आगरा के संयुक्त प्रयास से पेन्तेकोस्त का महापर्व 5 जून को सायं 6-9 तक सेण्ट्रल मेथोडिस्ट चर्च, आगरा में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इसमें शहरी व ग्रामीण अंचलों से करीब पांच सौ लोगों ने भक्तिपूर्वक भाग लिया। कैथालिक समुदाय (जिन्हें पवित्रात्मा की पूर्णता प्राप्त है) की उपस्थिति शून्य समान रही। समारोह की अध्यक्षता आर्चबिशप डॉ. आल्बर्ट डिसूजा एवं अति श्रद्धेय सिल्वेस्टर मैसी ने संयुक्त रूप से की। लकी डेविड मार्टिन और आशीष स्टीवनसन के निर्देशन में गायन मण्डली ने अवसरानुकूल भजन गाए। पास्टर जोसफ सिंह और विजय एलिस ने धर्मग्रंथ से पाठ पढ़े।

समारोह के प्रारम्भ में पास्टर नवरत्न सिंह ने प्रारम्भिक प्रार्थना पढ़ी। समारोह के समन्वयक डॉ. राजू थॉमस ने सभी आगन्तुकों का स्वागत सत्कार किया। मुख्यातिथियों को शॉल ओढ़ाकर व पौधे देकर उनका स्वागत किया गया। डॉ. राजू थॉमस ने बताया कि इससे पहले हम 8 बार जश्ने रूहे पाक समारोह मना चुके हैं। पहला पर्व 2014 में हमने सूरसदन में मनाया था। पिछले दो वर्षों से कोरोना संक्रमण के कारण हम यह समारोह इण्टरनेट के माध्यम से वर्चुअल रूप से कर पाए। पास्टर विशाल किण्डर, रेव्ह. मेलविन चार्ल्स एवं श्री प्रवीण मिश्रा ने विभिन्न आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर डा. राजू थॉमस, श्रीमती (डॉ.) मंजुला थॉमस एवं परिवार ने एक विशेष गीत प्रस्तुत किया। हैवलॉक मैथोडिस्ट चर्च, आगरा छावनी के युवाओं ने 'पवित्रात्मा का सामर्थ्य' नाम से एक लघु नाटक प्रस्तुत किया जिसे सभी भक्तों ने सराहा। समारोह के दूसरे वक्ता सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा के प्राचार्य डॉ. एस. पी. सिंह ने बताया कि ''आज पेन्तेकोस्त के दिन कलीसिया का जन्म हुआ था, इसलिए यह एक महत्वपूर्ण दिन है। योहन 14-16 में प्रभु येसु अपनी प्राण पीड़ा से पूर्व पवित्रात्मा भेजने की बात कहते हैं। यूनानी भाषा में पवित्रात्मा को एक सहायक पैराक्लीटॉस कहा गया है। स्वर्ग और पृथ्वी सारे ब्रह्माण्ड का सृष्टिकर्ता हमारी सहायता करने को तैयार है। कितनी विनम्रता है उसकी बात में। उसे ठीक ही सत्य का आत्मा कहा गया है, जो हमें सत्य का बोध कराता है।''

समारोह के दौरान डॉ. राजू थॉमस एवं उनकी धर्मपत्नी डॉ. मंजुला थॉमस का उनकी शादी की 25वीं वर्षगाँठ के अवसर पर अभिनन्दन किया गया। इसी क्रम में सेंट थॉमस चर्च, सिकंदरा, आगरा के रहने वाले नवाभिषिक्त पुरोहित फादर सचित करकेट्टा तथा नई सिस्टर किरन टोप्पो का भी सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। समारोह के दौरान एकत्रित दान पर पास्टर हैरीसिंह ने धन्यवाद की प्रार्थना पढ़ी। हेवलॉक चर्च के प्रधान पुरोहित पास्टर होरिस लाल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। अंतिम प्रार्थना अति श्रद्धेय सिल्वेस्टर मैसी ने की। आर्चबिशप डॉ. आल्बर्ट डिसूजा ने आर्शीवचन कहे – बेनेडिक्शन देकर सभा को रुखसत किया। समस्त कार्यक्रम का प्रसारण सेण्ट्रल मैथोडिस्ट चर्च के तकनीशियनों एवं फादर जेकब शाजी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन फादर मून लाजरस ने किया। समारोह के अंत में सभी भक्तों के लिए गरमागरम बिरयानी की व्यवस्था समन्वयक डॉ. राजू थॉमस एवं उनके परिवार द्वारा की गई थी। **— फादर मून लाज़रस, आगरा**

## सेंट एन्थोनी कान्वेण्ट स्कूल, आगरा में संरक्षक पर्व मनाया गया

आगरा, 13 जून। खोई हुई वस्तुओं को पाने के लिए याद किए जाने वाले पादुआ के महान संत अन्थोनी का महापर्व यहाँ आगरा छावनी क्षेत्र स्थित सेंट एन्थोनी कान्वेण्ट में पारम्परिक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

पर्व दिवस पर श्रद्धेय फादर लुईस खेस ने संत एन्थोनी के आदर में कान्वेण्ट चैपल में पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया, जिसमें कान्वेण्ट की धर्मबहनों के अलावा विद्यालय के कुछ कर्मचारियों ने भी भाग लिया। मिस्सा के बाद सेंट एन्थोनी के सम्मान में बाँटी जाने वाली बन्स और ब्रेड पर फादर ने आशीष की प्रार्थना पढ़ी।

सुपीरियर/प्रधानाचार्या की अनुपस्थिति में सिस्टर क्लेमेण्टीन ने कमान संभाली। मिस्सा के बाद कर्मचारियों के साथ एक प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। सिस्टर ने संत के जीवन और आश्चर्यकर्मों पर प्रकाश डाला। अंत में सभी के लिए एक पार्टी का आयोजन किया गया, जिसमें सबने दिल से भाग लिया। कर्मचारियों ने सिस्टर के प्रति आभार जताते हुए कहा, उन्होंने इतना प्यार और सम्मान पहले कभी नहीं पाया। हे संत एन्थोनी, हमारे लिए प्रार्थना कर! **— खबरची**

## M.C.'s Day Out!

Agra 20-21 June. "All work and no play makes Jack a dull boy" believing in this saying, our Missionaries of Charity Sisters, Agra arranged a Day Out (half day outing) for their inmates (divyang children).

On the first day i.e. 21st June, young boys were taken to Shark, newly started water park, near Rohta on the outskits of Agra-Gwalior Road. Rev. Sr. Vincy Paul and Clary accompanied them, whereas on the second day divyang girls had the wonderful outing. This time Sr. Celestine and Sr. Adlene joined them.

The children enjoyed to the maximum at various swings, water tubes and jhoolas etc.

Their joy and happiness was explicitely shining on their innocent faces. Later the children had a lovely lunch at a nearby restaurant, before returning Premdaan, Agra.

**- Mukti Elizabeth & Priya David, Agra**

## दो क्रिकेट मैचों में ब्रदर्स इलेवन ने फादर्स इलेवन को धो डाला!

आगरा, 10/14 जून। भयंकर गर्मी को शान्त करने के इरादे से ब्रदर्स के समर कैम्प के दौरान दो बार टी-20 क्रिकेट मैचों का आयोजन सेंट पीटर्स कॉलेज ग्राउण्ड में किया गया। दोनों ही मैचों में ब्रदर्स इलेवन टीम ने विरोधी फादर्स इलेवन टीम को बुरी तरह से धोकर रख दिया।

पहला मैच 10 जून को खेला गया। फादर्स टीम की कप्तानी फादर शाजी अन्तीनाट्ट ने की, जबकि ब्रदर्स टीम के कप्तान ब्रदर सुमन टोप्पो व सहायक ब्रदर स्वप्निल डाबरे थे। फादर्स ने टॉस जीतकर खेलने का निर्णय लिया। उन्होंने बीस ओवरों में 101 रन बनाए और विरोधी टीम के सामने एक आसान लक्ष्य रख दिया, जिसे बदर्स इलेवन ने आसानी से पूरा कर दिखाया। भीषण गर्मी में खेला गया यह मैच भारत-पाक के मैच से कम नहीं था।

दूसरा मैच भी सेंट पीटर्स ग्राउण्ड्स पर 14 जून को खेला गया। इस बार ब्रदर्स इलेवन टीम की कप्तानी का भार सलामी बल्लेबाज मितेश मार्टिन पर था। फादर्स इलेवन ने पहली हार का बदला लेने का जी तोड़ मुकाबला किया, किन्तु कुछ खिलाड़ियों की उम्र और बढ़ते पेट ने साथ नहीं दिया। ब्रदर्स की टीम ने 172 रन का विशाल स्कोर उनके सामने रखा। फादर्स इलेवन टीम मात्र 123 रन बनाकर धराशायी हो गई। कमेण्टेटर फादर डॉमिनिक जॉर्ज उर्फ अमित ने अपनी मनमोहक कमेण्ट्री से वातावरण को काफी मनमोहक बना दिया।

मैच समाप्ति पर निवर्तमान आर्चबिशप डॉ. आल्बर्ट डिसूज़ा ने दोनों टीमों को उनके खेल के लिए बधाई दी। इस अवसर पर फादर थॉमस के.सी., फादर जॉर्ज पॉल और फादर मून लाज़रस भी उपस्थित थे।

**— ब्रदर्स स्वप्निल, जीवन और सुमन टोप्पो**

## Month of June dedicated to the Sacred Heart of Jesus

The celebration of the Feast of The Sacred Heart, reminds us that, to God no one is definitively lost (Ezekiel 34:11-16). Never! The feast reminds us of the constant care and concern that God has, even now for each one of us and the whole Universe (Lk 15:3-7).

The Sacred Heart of Jesus challenges us to love others as Jesus loves, selflessly, unconditionally and sacrificially, and to express this love in humble and loving service done to others (Rom 5:5-11). Just as Christ is so easily available to us, we must also be to each other. Our hearts become stony and insensitive through our daily exposure to acts of cruelty, terrorism, injustice and impurity. Hence God prescribes a change of heart through His prophet Ezekiel (Ez 11:19-20) to make our hearts soft, large and sensitive: "I will give them a new heart and put a new spirit within them; I will remove the stony heart from their bodies and replace it with a natural heart." Let us ask Jesus to make our hearts like His. Sacred Heart Feast is celebrated on third Friday after Pentecost.

## Nuncio's Visit to St Fidelis Church, Aligarh

We can't hold Destiny and Time, we can't hold heart beats and life, but we can hold one thing and that is, the good memories of precious moments. The Apostolic Nuncio to India Archbishop Leopoldo Girelli's visit on 19 June 2022 to our St Fidelis Church, Aligarh was a privileged and graced moment for our Fidelian Family. On the Solemnity of the Most Holy Body and Blood of Christ, the Holy Eucharist was presided over by His Excellency Archbishop Leopoldo and concelebrated by Fr John Roshan the Parish Priest, Charles Toppo the Asst. Priest, Fr Sunny the Dean, Fr Jose Akkara, Fr Elias Correira, Fr Marian Lobo, Fr Amit, Fr. Arul Kumar and Fr Stephen Fernandes who assisted the Nuncio. The Nuncio serves both as the ambassador of the Pope to the President of India and as a delegate between the Catholic hierarchy in India and the Vatican.

The Nuncio was accorded a warm welcome and he, along with the priests representing the diocese, were led to the church in a procession by carrying decorative customary umbrellas, held beautiful flags, showering of rose petals and a traditional dance. The well decorated church altar, the presence of a modest number of faithful and the youth with its celestial rendition set up a prayerful ambience.

Briefing upon the historical and commercial importance of Aligarh and the establishment of the Church, he said we need to live the virtues of our Patron, St Fidelis. In the midst of a pluralistic culture, we Christians need to be faithful witnesses of Christ, to proclaim the love of God. Nourished by the precious Body and Blood of Christ we are called to give of ourselves and experience the miracle of receiving God's abundant blessings.

While imparting the final blessing on behalf of the Pope, Archbishop Leopoldo exhorted three points to live by - To be faithful to the Church- To have daily family prayers and not to miss the Sunday Eucharistic celebrations from which we draw strength to live our Christian life.

To be faithful citizens of the country and follow the laws and as Christians to be outstanding in honesty and promoters of peace in our place of work and the society.

He reminded each one of us the obligation to be faithful in caring for the earth, helping the poor and be protectors of ecological stability.

The Nuncio also visited Savio NavJeevan Bal Bhawan and was happy to meet the children. He appreciated the challenging ministry and said that works like these reveal the true face of the church and keep the hope of the future alive.

**Sr. Joanita Fernandes, FS, Aligarh**

## उपयाजक असीम बेक पारम्परिक परिवेश में पुरोहित अभिषिक्त

कटिकाही (गुमला) 15 मई। आगरा महाधर्मप्रांत के लिए यह दिन स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा, जब महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि ने उपयाजक असीम बेक के परिवार के विशेष अनुरोध पर उन्हें उनके अपने पैतृक चर्च कटिकाही (गुमला) में पुरोहित अभिषेक प्रदान किया। इस अवसर पर सीधी सादी भाषा शैली में अपने प्रभावशाली प्रवचन में महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि ने उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा, कि ''असीम बेक आज अपने ही बलबूते पर पुरोहित नहीं बन रहे हैं, इसके पीछे उनके माता-पिता का आदर्श और प्रार्थनामय जीवन, त्याग और परमेश्वर की बहुत बड़ी कृपा है। हम में से कोई भी व्यक्ति प्रभु का अनुसरण करने के लिए शत प्रतिशत योग्य नहीं है, प्रभु ही उसे योग्य बनाता है। जिसे वह चाहता है, उसे बुलाता है और जिसे बुलाता है उसे सामर्थ्य देता है, ताकि वह जाकर सुसमाचार का भलीभांति प्रचार करे। असीम बेक बेशक अपनी पल्ली में अभिषिक्त हो रहे हैं, किन्तु वह आगरा महाधर्मप्रांत के लिए, वरन् संपूर्ण विश्व के लिए, वैश्विक कलीसिया के लिए हैं और सबके लिए कार्य करेंगे।'' आर्चबिशप ने अपने प्रवचन में आगे कहा, कि ''यह समस्त पल्ली हमारे धन्यवाद की पात्र है, जिसने इतने ढेर सारे पुरोहितों और धर्मबहनों को प्रभु की सेवा में तैयार और प्रेषित किया है।''

महाधर्माध्यक्ष ने उपयाजक असीम बेक को आज के बदलते युग-परिवेश में पुरोहित की जिम्मेदारी का एहसास कराया। उन्हें बताया कि उन्हें स्वयं प्रभु ईसा मसीह का दूसरा स्वरूप बनकर ईश्वरीय करूणा बांटना है।

धर्मविधि से पहले पल्ली पुरोहित फादर कॉस्मॉस ने स्थानीय ऊराऊँ भाषा में सबका स्वागत किया एवं असीम बेक का जीवन परिचय दिया। तत्पश्चात स्थानीय बालिकाओं ने रंग-बिरंगी पोशाक पहने प्रार्थना नृत्य करके पारम्परिक वातावरण में सबका स्वागत किया। इसके बाद अभिषेक के उम्मीदवार ने अपने माता-पिता के साथ रंग-बिरंगी झण्डियों से सजे विशाल प्रांगण में प्रवेश किया। उन्होंने असीम बेक को आगरा महाधर्मप्रांत की सेवा में महाधर्माध्यक्ष को सौंप दिया। गुमला धर्मप्रांत के प्रशासक श्रद्धेय फादर लिनुस ने महाधर्माध्यक्ष से उन्हें पुरोहिताभिषेक प्रदान करने का अनुरोध किया। सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी, आगरा के गुरुकुलाचार्य श्रद्धेय फादर प्रकाश डिसूजा उम्मीदवार की योग्यता के सम्बन्ध में घोषणा की (गारण्टी ली)। तब महाधर्माध्यक्ष ने उन्हें आजीवन ब्रह्मचर्य एवं आज्ञापालन की शपथ (पुरोहितक व्रत) धारण करायी और आशीष के पवित्र तेल से उनका अभिषेक किया। वेदी पर उपस्थित सभी पुरोहितों ने प्राचीन परंपरा का अनुसरण करते हुए असीम बेक के सिर पर हाथ रखकर ईश्वर से प्रार्थना की एवं उन्हें पूजा के वस्त्र धारण कराए। धर्मविधि में आगरा महाधर्मप्रांत से कई पुरोहितों, सेमीनेरी की ओर से श्री जोएल मिंज, क्लॉडियुस टोप्पो ने भाग लेकर असीम के लिए प्रार्थना की एवं उनका उत्साहवर्धन किया।

इस अवसर पर पल्ली की गायन मण्डली ने सुन्दर व अवसरानुकुल गीतों के माध्यम से भक्ति भावना में चार

चांद लगा दिए। अभिषेक की धर्मविधि के तुरंत पश्चात एक अभिनन्दन समारोह का आयोजन कर नवाभिषिक्त पुरोहित का सम्मान किया गया। समारोह कुल मिलाकर करीब चार घण्टे तक चला। फादर असीम बेक को मिलाकर अब आगरा महाधर्मप्रांत में पुरोहितों की संख्या बढ़कर 84 हो गई है। **- फादर मून लाजरस**

## XVIII National Council Meeting of CDPI in Mysore

The eighteenth national council meeting of the Conference of the Diocesan Priests of India (CDPI) was held on 17-19 May 2022 in Prabodhana, the Pallotine Theologate, Mysore. More than seventy diocesan priests from the Latin Rite dioceses of India participated in the meeting. Rev. Fathers Santhosh D'sa and Saji Palamattom represented the Archdiocese of Agra for the same. The central theme of the meeting was "Synodality in the Life and Mission of the Church in India."

The convention began with the Holy Eucharistic celebration presided over by the Most Rev. Thomas Antony Vazhapilly, the bishop Emeritus of the diocese of Mysore. This was followed by the enriching seminar on the above mentioned theme. The keynote address was delivered by Rev. Dr. Jacob Prasad who is the General Editor of POC, Cochin. He explained in detail how the ongoing synod on synodality must be made personal by every priest so that it becomes a way of life in the Church. Most Rev. Udumala Bala, the bishop of Warangal and the Chairman of CCBI Commission for the Clergy, in his presidential address spoke about synodality as the new hope of reviving the Church and making her more relevant to the life of the people of God.

Day two began with an inaugural address by the National President of CDPI Rev. Fr. Michael Anikuzhikattil. He praised Rev. Fr. Jacob Prasad for his well reflected thoughts on Synodality and hoped that the Holy Father's call to this Synod on Synodality becomes a true way forward for the Church. Rev. Fr. Vincent B. Wilson, resource person spoke on the following points:

1. Inverted Pyramid Model
2. A Bottom-up Approach
3. Without Communion, No Participation and Mission
4. One Church - Many Faces
5. Exercise of Synodal Process in Everything
6. Mission as Witnessing
7. Facilitatior - A New Concept of Leadership
8. Alternate Methods of Decision Making
9. Community Living
10. Ministry Beyond Borders

The discussions and deliberations came to an end on 19th May with the group dynamics and reporting session followed by the drafting of the action plan.

Bishop Udumala Bala informed all the participants that the CCBI has appointed Rev. Fr. Charles Leon of Trivandrum diocese as the new Secretary to the CCBI commission for the Clergy, Religious and of Vocations. He thanked the outgoing secretary Rev. Fr. Irudaya Raymond Joseph of Sivagangai diocese for his selfless and systematic way of leading the Commission.

**- Fr. Saji Palamattom**
**Secretary - ARPC, Agra Region**

## 39वाँ जीवन लक्ष्य पहचान शिविर सम्पन्न आगरा की उपस्थिति नदारद

केस्पियरगंज (गोरखपुर) 20 मई-7 जून। आगरा कैथोलिक यूथ मूवमेण्ट (आई सी वाई एम) आगरा क्षेत्र

द्वारा आयोजित 30वाँ एल ओ पी (जीवन लक्ष्य पहचान शिविर) केस्पियर नगर के शान्तिवन प्रार्थना केन्द्र, गोरखपुर में 20 मई से 7 जून तक सफलतापूर्वक सम्पन्न गया। शिविर में 58 युवक-युवतियों ने भाग लिया। विशाल व मदर धर्मप्रांत आगरा की उपस्थिति नदारद रही। शिविर में 10वीं एवं 12वीं कक्षा के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। शिविर के बीच में 7-9 तारीख तक आध्यात्मिक साधना (रिट्रीट) को युवाओं ने प्रभु के साथ प्राइम टाइम गुजारा। साधना का संचालन मेरठ धर्मप्रान्त के पुरोहित, पूर्व युवा निदेशक एवं एक्स ऐलोपियन श्रद्धेय फादर पीटर एन्थोनी ने किया।

शिविर में बहुत से गंभीर एवं ज्वलंत विषयों जैसे- कलीसिया का इतिहास, पवित्र बाइबिल, सी.सी.सी., वर्तमान धर्मसभा, वर्तमान संदर्भ में परिवार की भूमिका, कैथोलिक नेतृत्व, सैक्स ज्ञान, मीडिया का सकारात्मक रुख, लघु ख्रीस्तीय बुलाहट एवं धर्मसंघीय जीवन आदि पर विस्तृत चर्चा की गई। शिविर के दौरान युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न खेलकूद, शैक्षिक कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई, जिनका युवाओं ने भरपूर आनन्द लिया। एक दिन के भम्रण के लिए युवाओं को महात्मा गौतम बुद्ध की जन्मस्थली लुंबिनी (नेपाल) ले जाया गया। मेरठ धर्मप्रांत के अनुराग डेनियल एवं लखनऊ की कु. अनुप्रिया जेनिफर तिर्की बेस्ट उम्मीदवार चुने गए।

यह देख और जानकर कि युवाओं के इस महत्वपूर्ण शिविर में आगरा और वाराणसी धर्मप्रांतों से युवाओं ने भाग नहीं लिया। हालांकि वाराणसी धर्मप्रांत में प्रतिवर्ष अपना शिविर आयोजित किया जाता है, किंतु आगरा में अंतिम बुलाहट शिविर कई वर्षों पूर्व श्रद्धेय फादर (अब बिशप) जोसफ थाइकाट्टिल के प्रयास से आयोजित किया गया था।

एक अध्ययन के अनुसार 39 वर्ष पूर्व प्रारम्भ किए गए इस शिविर का मुख्य उद्देश्य था- युवाओं को उनके व्यक्तिगत कैथोलिक विश्वास में सुदृढ़ बनाना (फेथ फॉर्मेशन), ख्रीस्तीय युवाओं को भावी जीवन के लिए परिचित कराना तथा स्थानीय बुलाहट को बढ़ावा देना। विगत 39 वर्षों में इस बुलाहट शिविर में असंख्य पुरोहित एवं धर्मसंघिनियों को प्रभु की सेवा में तैयार किया है।

शिविर के 39 वर्षों के इतिहास में इसमें बहुत से परिवर्तन हुए हैं। यह शिविर एक प्रकार से अपनी असली पहचान खोता जा रहा है। युवा इस बुलाहट शिविर के बजाय समर कैम्प (ग्रीष्माकालीन शिविर) के रूप में देखते हैं। इसकी अवधि एक महीने से घटकर अब मात्र सत्रह दिन रह गई है। प्रत्यक्ष प्रेरिताई एक सप्ताह से घटकर मात्र 3-4 दिन की रही गई है। अधिकांश धर्मप्रांत और पल्लियां इसके बारे में आज भी ठीक से नहीं जानते हैं। प्रतिवर्ष इसके आयोजन में बहुत मैन पावन (लोग) धन आदि लगाया जाता है, फिर भी परिणाम ढाक के तीन पात। हालांकि बहुत गंभीर एवं ज्वलंत विषयों को इस शिविर के दौरान पढ़ाया-समझाया जाता है, लेकिन कुछ विषय युवाओं को आकर्षित नहीं कर पाते हैं - उन्हें भी बदलने की जरूरत है। ख्रीस्तीय बुलाहट, पारिवारिक जीवन, धर्मसंघीय जीवन, पवित्र बाईबिल, कलीसिया का इतिहास पर विशेष ध्यान दिए जाने की जरूरत है।

टीम अग्रेडियन्स जीवन लक्ष्य पहचान शिविर के आयोजकों और इससे सम्बन्धित प्रत्येक स्वयंसेवी एवं उम्मीदवार के प्रति आभार प्रकट करना चाहती है। आशा की जाती है, कि आने वाले वर्षों में अधिक से अधिक

एक्स एलोपियन्स को बुलाया जायेगा, उनके धर्मसंघीय, पौरोहितक एवं पारिवारिक जीवन के अनुभवों को सुना-समझा जायेगा।

## Two Jesuit Priests among three killed in Church in Northern Mexico

Two elderly Jesuit priests were among three people killed on Monday 20 June 2022 inside a church in Chihuahua state, northern Mexico.

The third person had sought refuge inside the church in the village of Cerocahui before all three were killed according to a statement from the Chihuahua state government.

In a statement, the Society of Jesus, the Religious Order also known as the Jesuits, condemned the killings of the two priests.

It also asked Mexican authorities to recover their bodies, which it said had been removed from the church "by armed individuals," according to the statement.

In a separate statement, the organization identified the priests as Javier Campos Morales, 79, and Joaquín César Mora Salazar, 80.

The Society also asked for increased protection for the residents of Cerocahui and the wider Sierra Tarahumara region.

A predator could have sent hundreds of blackbirds crashing to their death in Mexico

Violent attacks are a problem in the region, which the Society described as under-policed.

Following the killings, Mexico's National Guard and Ministry of Defense mounted an operation to secure the area, according to authorities.

During his morning press conference on Tuesday, Mexican President Andrés Manuel López Obrador also said that authorities are "looking into the situation."

"It's an area with a strong presence of organized crime," he said. "It appears that there is already some information on those who were possibly responsible for these crimes."

## Catholics in India welcome the Vatican announcement about the appointment of the first Dalit as a cardinal.

Archbishop Anthony Poola of Hyderabad

The elevation of Archbishop Anthony Poola of Hyderabad among 21 new cardinals created by Pope Francis was announced on May 29.

Another Indian prelate, Archbishop Filipe Neri Antonio Sebastao di Rosario Ferrao of Goa and Daman, is also became a cardinal.

"It is a proud moment for all Indians irrespective of their caste and creed," Franklin Caesar Thomas, coordinator of the National Council of Dalit Christians (NCDC), told UCA News.

Archbishop Poola's elevation comes after decades of protests by Dalit Catholic groups seeking the appointment of their community people to "greater servanthood." There was also a demand for an Indian Dalit rite in the Catholic Church.

# Archdiocese at a Glance...Cont.

Papal Nuncio – Abp. Leopoldo Girelli visits St. Fidelis' & Savio Navjeevan Bal Bhawan, Aligarh



39th LOP, Gorakhpur

Premdaan (M.C. Agra) inmates' Day Out

Thanksgiving Mass – Fr. Sachit & others



Sr. Rita Mary, New Provincial, FSJ, Etmadpur



Congrats! S. Wedding Anniversary

## Lest we forget...

Ashley D'Rozario
(3.5.2022)
SMC, Agra

Sr. Mary Jane, FSPM
(19.5.2022)
Sr. of Fr. Stephen

Mother Lybia FCC
(21.5.2022)
Thrissur

Fr. Subhash Anand
(22.5.2022)
Udaipur

Augustin William
(1.6.2022)
Husband of Nishi Augustin, Cathedral

Abhishek Tirkey
(14.6.2022), Jharkhand
Student of St. Paul's I.C., Agra

Sr. Regina 31, Poor Clares'
(14.6.2022)
Dumka

Sr. Shanta Sharma, Canossian
(18.6.2022)
Simla

Rosy James
(18.6.2022)
SMC, Agra

Jawahar Lal
(19.6.2022)
Bhimnagar (Mathura)

Editorial Team : Fr. E. Moon Lazarus, Fr. Jacob P., Dr. Antony A. P., Mrs. Nishi Augustine

*With Best Compliments From :*

The Manager, Principal, Staff & Students of

# Our Lady of Fatima Senior Secondary School

Ramghat Road, Aligarh (202001), Uttar Pradesh , INDIA.

E-mail: ladyfatimaalg@gmail.com Website: www.ourladyfatima.org


For Private Circulation Only

Printed at
St. Joseph's Printing School
Motilal Nehru Road, Agra-3
Ph. : 9457777308

Edited and Published by
Fr. E. Moon Lazarus
Cathedral House
Wazirpura Road, Agra-282 003
E-mail : agradiance@yahoo.com